घरमुहां
(उपन्यास)

भाग - एक

१

पूर्वमे सूर्यक लाली पसरि रहल छलै। चिड़ै चारुकात छिड़िआ कऽ अपन गन्तव्य दिश बढ़ब शुरु कऽ देने छल। मास्टर रमेश उपाध्याय नित्यकर्मसं निवृत्त भऽ मुंहमे ब्रश रगड़ैत ओसारापर सड़क कातमे आबि बैसि गेल अछि। कएक दिनसं नेपाल बैंकमे जएबा ले सोचि रहल अछि मुदा दिनभरि सड़क पर लोकक जुलुश आ नारासं भयभीत भऽ बाहर निकलब मुश्किल भऽ गेल छैक। आइ किछु शांति बुझाइछै, ओ जल्दीसं मुंह हाथ धो कऽ तैयार होब' चाहैत अछि। दशे बजे नेपाल बैंकमे जा पाइ भजा आनब ठीक हयतै सोचैत पत्निके जलखई बनएबाक लेल कहैत छैक।

हेटौडाबाली पत्नि सरिता आंगन बहारि भाडा वर्तन मांजि रहल छलीह। कनेक रोषसं बजैत छैक - एह, तखन त सुरजो ने ठीकसं उगलैए आ अहांकें जलखई चाही। कनेक दम धरु ने !

मास्टर साहेब सेहो कडकि उठैछै - तखन रहब काल्हिसँ भुखले। संगमे चेक अछि आ भजाब के जोगाड़ नै लागि रहल अछि। कहियाधरि दम धरब कहु, ईत एहिना होइत रहतै।

नै, हमर कहब दिन-देखार हुअ दिउनौ स छल। आन्दोलन कतौ अपना वशमे छैक' -पत्नि हाथ चलवैत कनेक दुखी स्वरसँ बात फरिछाब' चाहैत छथि। जाड़क मास छलै, हाथ कठुआइत त रहबे करैक। तैयो घरक समस्या आ पतिक क्लांत अनुहारक पीड़ा महशूस कऽ ओ जल्दी भाड़ावर्तन मांजि कलपर अखारब शुरु कऽ दैछ।

भिनसरके आठक अमल भऽ गेल छै। मास्टर साहेब घड़ी देखैत छथि। भानस घरमे किछु तेल-फोड़नमे छनछनाइत लगैत छन्हि। पक्के पत्नि आलुक भुजिया बनबैत हएतीह। गहुमक रोटी आ आलुक

भुजिया मास्टर साहेबक प्रिय जलखई। मास्टर सोहबके भुखो लाग लगलै। ओ अपन कोठरीमे जा पेंट, शर्ट पहिरैत छथि। सेनुरसं लेभरायल ऐनाके साफ कऽ मुंहकें देखैत छथि। आइ कए दिनसँ दाढी बना नै सकल छथि। अपने बनबैत नै छथि आ सैलुनमे जा बनएबाक वातावरण नै छैक तखन एहि बीच नुक्कड़ पर बैसल नौआके अपने घरमे बजा दाढी मोंछ बना लेल करैत छलाह। सेहो आई कए दिनसं गायब अछि। केओ कहैत छल - ओहो अपन चलता दोकान समेटिकऽ आन्दोलनमें लागि गेल अछि। ओकरा बढ़का फरट्टामे लल्हका झंडा उठौने नारा लगबैत पत्नि सरिता देखने छलखिन्ह।

मोनतं मास्टरो साहेबके होइत छलै, जुलुशमे सामेल भऽ मीते जकां जोर-जोरसं नारा लगा अपन सहभागिता देखबितै। मुदा जे उन्माद एखन युवा सभमे छै ओ की हमर अनुहार के पचा सकत ? - ओ बेर-बेर सोचै छथि। यद्यपि अपन कएक पुश्ताक बसाई छैक ओकर एहि धरतीपर। वाबा, दादा, एत्तहि जनमलाह, एत्तहि स्वर्गिय भेलाह। एहि समाजमे एना कऽमिललाह जे अपनाके कहियो अलग नहि बुझलनि। खेती, पथारी, घर-आंगन, विवाह-शादी, मुडंन, उपनयन, नीक-बेजाय सभमे लागल रहलाह। आई कोना हम सभ आन भऽ गेलिए'। एहि हुआरे जे हमरा सभक अनुहार पहाडीक अछि। हम सभ घरमे नेपाली बजैत छी ? पता नहि मास्टर साहेब आर कतेक देर धरि खुरसी पर बैसल सोचैत रहतथि, जं विचेमे पत्नि टोकि नहि दीतनि - 'सुनैछी, नाश्ता भऽ गेल। हाथ धोकऽ बैसू !'

मास्टर साहेब धड़फड़ाकऽ उठैत छथि आ आंगनमे कलपर जा हाथ-पएर धोकऽ ओसारापर पलथीमारि बैसि रहैत छथि। पत्नि थारीमे आलुक भुजिया आ गरमे रोटी लऽकऽआगांमे राखि दैत छथिन्ह। मास्टर साहेब खाएब शुरु कऽ दैत छथि। ताबत पत्नि कलमेस लोटामे पानि आनि थारीक बाम कात राखि दैत छथिन्ह आ लगेक पीढिके अपना दिश घुसका बैसि रहैत छथि। मास्टर साहेबके हबर-हबर रोटी तोड़ैत देखैत रहैत छथि। ओकरा बुझल छैक आइ नेपाल बैंक लि.मे जाही पड़तै नहि त अनर्थ भऽ जएतै। घर परिवार चलाएब मुश्किल भऽ

जएतै।

मास्टर साहेब जलखई समाप्त कऽ लोटाक पानि पीबि हाथ धोएबालेल कलपर जाइत छथि। हाथ धोकऽ गमछासं पोछि घरमे पैसि हाफ स्वीटर पहिरैत छथि आ कनेक मैलगर पुरना कोटके सेहो देहमे सन्हिया लैत छथि। माघक भोर त ओहिना कपकंपबैत छै। घड़ी पर नजरि दैत छथि - पौने दश भऽ गेलै। आब चलना चाही ...।' देहरीके टपबाले' एक डेग आगां की बढ़ौलनि नारा-जुलुशक आवाज कानमे पड़लनि -'मधेश आन्दोलन- जीन्दावाद !मधेश सरकार- जिन्दावाद, पहाड़ी शासक - मुर्दाबाद !'। आ एकटा ढेपा घरक छतपर तराकसं खसलै। मास्टर साहेब चोट्टे अपन बढ़ल पएरके पाछा कएलनि आ केवार बन्नकऽ घरमे जा धमस बिछाओन पर खसलाह। हुनका लागल छलनि एतेक दिन भऽ गेल छै किछु बात त भेल हेतै, वातचीत भइए रहल छै, आइ भोरेस शांतो छलै टोल, महल्ला। काज त आइ भइए जाएत। आब की करबै ?

पत्नि हहाएल, फुहाएल लगमे अएलखिन्ह-की भेल, किछु छतपर धम्मसं खसलए। केओ ईट-पाथर त ने फेकलक ! मास्टर साहेबके लगैछै जं बातके भरिआकऽ बाजत त पत्निसहित धीआपूता डेरा जएतै। एक त ओहिना एहि आन्दोलनमे पहाडी समुदायके लोक दहशतिमे अछि। तएँ कितु नरम भऽ बजैत छथि - नहि तेहन नै कोनो बात। जुलुशके देखलिऐअ तएँ वीलमि गेलहुं। शांत भऽ जाएत त जाएब ।!

'नहि, जएबाक कोनो काज नै छैक। समय खराब भऽ गेल छैक। भानुचौकपर भानुके मूर्ति तोड़ि देलकै, कएटा दोकानमे आगि लगा देलकै। किछु गोटेके घरके सीसा पाथरसं फोरि देलकैअ। दिन-दिन बात बीगड़ि रहल छै। नै जाउ किछु कऽ देत त, कत्त की करबै हम सभ ! - पत्नि अनघोल कर लगलीह। जेना आदंक पसरि गेल हो सौंसे देहमे।

'अहां व्यर्थे चिन्तित होइछी। हमरा केओ किछु ने कहत। भरल शहरमे त हमर विद्यार्थी अछि। ककरो हम विगाड़ने नै छिऐ त के की करत !' -मास्टर साहेब तोष भरोस दैत छथिन्ह।

बाहर सड़कपर लोकक आवागमन बढ़ले जा रहल छैक। जोर-जोरसं नारा लगाओल जा रहलैक अछि। सरकार प्रमुखके अन्ट-सन्ट गारि पढ़ल जा रहल छैक, पुतला दहन हएतै से आन्दोलनी सभ हल्ला कऽ रहल होइछ। नारासं लगैछै विभिन्न पेशाकर्मी सभ सेहो आन्दोलनमे उतरि गेल अछि। शिक्षकों सभ हएबे करतै। मास्टर साहेबके मन कछमछा जाइछै। हमरा चलए त हम मीतक संग नारा लगाबी, झंडा उठाबी...मधेशी एकता- जिन्दाबाद। मुदा...। पता नहि, लोकके की भऽ गेल छै। किए ई अनुहार देख नहि चाहैए ...! मास्टर साहेब सड़कपर चलैत समूहक बोलीसं आकर्षित भऽ एकबेर अपन खिड़कीक दोगदऽ बाहर देख चाहैत अछि। खिड़कीक पटके कनेके अलगा देखैत अछि त जी सन्न रहि जाइत छैक। मीत बढ़का लाठी लेने, मुरेठा बन्हने आगा-आगां नारा लगबैत पाछा एक लहासके फरकीपर चारि युवक उठौने बढ़ल जा रहल अछि। नारा लागि रहल छैक -बुचनु ठाकुर- अमर रहे। शहीद ठाकुर -जीन्दावाद। गृहमंत्री-राजिनामा दे। प्रधानमंत्री- राजिनामा दे। लोक जेना सनकि गेल अछि। फरठ्ठासं देखरगर घरक देवालपर, भीठपर फटाक-फटाक मारैत आगा बढ़ि रहल अछि।

मास्टर साहेब डरे सर्द भऽ जाइत छथि। स्थिति बीगड़ि गेलै। गोली-गट्ठा चला कऽ ई सरकार त मधेशी जनताके आओर उत्तेजित कऽ रहलैक अछि। दिनके एक बाजि गेल हयतै। बाहर निकलब संभव नहि। मास्टर साहेब गओंस खीड़की बन्द करैत छथि आ पुनः ओछानपर पड़ि रहैत छथि।

□□□□

२

सांझ पड़िते सौसे शहर जेना भयावह भऽ जाइत छैक आइ काल्हि। धूम-धड़ाका कतौ ने कतौस उठिते रहैत छैक। दिनमे सडक पर फेंकल गेल अश्रुगैसक दुर्गन्ध जेना घर घरके पैसि रहल हो। लोक सांझे दरबज्जा लगा घरमे बैस रहैत अछि। बरु खौंझा रहल छैक आब लोक। एतेक दिन भऽ गैलै, दर्जनों लोक शहीद भऽ गेल आ सरकारके, आठो दलके किछु नहि बुझाइत छैक।

मास्टर साहेब सेहो खौंझाएल सबेरे दरबज्जा बन्दकऽपत्निस कहैत छथि - हे, जल्दी भानस-भात कऽलू। आ सबेरे सकाल सुतबाक व्यवस्था करु। ई हुड़दंग एखन आरों चलत।'

पत्नि भानस घरमे पैसि जाइत छैक। मास्टर साहेबके दोसरों बातक चिन्ता छैक। काल्हिसं घर कोना चलतै। पाइ नहि तं अन्न नहि आ अन्न नहि त पेटमे दाना नहि। दूटा गेल्हबा-गेल्हबी छैक। जुआन बेटी छैक। कोना की हयतै।

विजुली गुम्म भऽ गेल छै से आओर डेरावन लगैत छैक। मास्टर साहेब अपन कोठरीमे कुर्सिपर बैसल डायरी उनटबैट छथि। आइ त चौबिस गते भऽ गेलै। तीन माससं सौसे मधेश जड़ि रहल अछि, मुदा हाय रे नेता सभ...।

'ताबत फोनके घंटी बजैत छैक। मास्टर साहेब त पहिने सकपकएलाह, फेर हिम्मत कऽ फोन उठबैत छथि - 'हेलो, के छी ?'

'मीत हम छी जगमोहन। की हालचाल छै ?'

मास्टर साहेबके जानमे जान अएलनि -जी, हम ठीके छी।

'नहि, अहां ठीक नहि छी। हमरा पता चलल अछि अहांक घरपर पत्थरबाजी भेल अछि।'

'जी नहि, के कहलक अछि। हम दिनभरि घरेमे छी। कहां किछु भेलैए।'

'मीत, हमरोसं झूठ बजैत छी। हमरो सभके आदमी छैने। हम रहितिऐ त सारके गरदनि मरोड़ि दितिऐके। हम सभ त आगा रही... ।'

मास्टर साहेबक आंखि डबडबा जाइत छैक। अन्हारमे के देखैत, तंयो ओ गमछासं आंखि पोछिलैत अछि। मुदा किछु बाजि नहि पबैत अछि।

'मीत, हमरा त इहो बुझमे आबि गेल अछि, अहां कए दिनसं बाहर नीकलि नहि पौलहुं अछि। घर दुआर केना चलतै, बाल वच्चा के की भऽ रहल छै ?'

मास्टर साहेबके एखनो बकार नहि फुटैत छन्हि।

'अहां एखने हमरा ओत्त चलि आउ सपरिवार। हम रमुआके पठबैत छी। ओत्त खतरा अछि।' आब मास्टरके नहि रहल भेलै। कहलक -मीत, जखन अहांके लगैए हमरापर खतरा अछि त ई खतरा अहां लग जाएत त ओहु ठाम खतरा आबि सकैछ ने।

'अहांके नहि बुझल अछि, एहि आन्दोलनके मुख्य व्यक्तिमे हमहुं छी से। के की कऽ लेत।'

'मीत, अहां ठीके बड़ भावुक आ स्वछ विचारक लोक छी। ई आन्दोलन अहीं सनक समर्पित लोकसं बढ़ि रहल छैक। एकटा पहाडीके अहां अपन घरमे रखबै त ई हल्ला बाहर जएतै। आन्दोलनमे लागल लोक अहांपर शंका-उपशंका करत। अहांके चोट लागत, आन्दोलन कमजोर होइत जएतै। ई किन्नहु नहि भऽ सबैछ। हम एत्तहि ठीक छी।

मास्टर साहेबक विश्लेषणसं जगमोहनपर कोनो प्रभाव नहि पड़ैछ। ओ अपने आबके लेल तैयार भऽ जाइछ। मास्टर साहेबके कहैत अछि - हम किछु नहि बुझैत छी। अहां सभके तैयार राखू, हम अपने अबैछी।'

'मीत, ई आन्दोलन अहीक नहि, हमरो अछि। हम अपना आंखिसं एहि ठाम होइत शोषण, उपेक्षा देखने छिऐ। एहि संघर्षमे नुकाएल जे भाव छैक तकर प्रतिफल हमरो सभके भेटत ने। मुदा एखन जे स्थिति छैक ताहिमे शांते भऽ रहब ठीक छैक। हम सभ व्यवस्था कऽ लेबै, अहां निश्चिन्त रहु।'

मास्टर साहेबक बातसं एखनो जगमोहन सहमत नहि अछि। ओ आक्रोश व्यक्त करैत कहैत अछि - मीत, आइ अहां अनठीआ, पहड़िया, शोषक कोना भऽ गेलिए। दृष्टिकोणमे ई वदलाव किएक ? जहिया हमर बेटी इजोतिया स्कल नै जाए चाहे, तहिया कान्ह पर लऽ जा, विस्कुट, लेमनचूस, चकलेट खुवा-खुवा अहां पढ़ौलिऐ, इजोतियाक विआहमे घरदेखी अहां कैलिए, छेकामे भारक आगां वाप बनि अहां गेलिऐ, विआहमे रुसल जमायके बिना ककरोसँ पुछने अपन हाथक औंठी पहिरा भात खुऔने रहिऐ, विदाइ बेरमे वापोसं बेसी भोकासी पाड़िकऽ कानल अहां रही-तखन अहां आन नहि रहिऐ। आइ लोकक नजरिमे दोसर, वांतर भऽ गेलिऐ ?'

मास्टर साहेब पछिलका बातकें स्मरण करैत जगमोहनके समझबैत छथि - मीत, ओ समय दोसर रहै। अइ आन्दोलनके लोक अपना अनुकूल सेहो देख लागल अछि। राता-राति लोकके नजरि बदलि गेलैए। सभ अहीं जकां नहि ने छैक। अहांके एहि आन्दोलनमे नीक सम्मान अछि। हम नै चाहै छी हमरा खातिर अहां कमजोर परी।

'हम कोना मानिली जे हमर मीत दुखमे रहए आ हम एत्त फैलस रही। हम छोड़ि देब वरु आन्दोलन। हम फेर पुरने दिन जकां दलान पर बैसिकऽ गायल करब - अपना किशोरी जीके चरण दबएबै हे, हम मिथिलेमे रहेबै... ।'

मास्टर साहेबके लगैत छैक मीत फेर भावुकतामे बहल जा रहल छथि। आ ओ हुनको बहकाब चाहैत छथि जाहिस हम बात मानि जइअनि। नै त कतौ ठीके दुरापर ने आबि जाथि। मनविचलित भऽ जाइत छनि। पत्निके सोर पाड़ैत छथिन्ह - सरिता, कत्त छी ?

पत्नि भनसा घरसं सोझे मास्टर साहेब लग झटकारैत अबैत छैक। समयके देखने सबके मन डहकल रहैत छैक। अबिते पुछैछै - की भेल ?

'नहि, किछु नै। मीत जीदकऽ रहल छथि जे हुनका ओइ ठाम अपना सभ चली।' 'नहि, केना हएतै। की कहत लोक। ताहुमे एखन। हुनको बदनामी हयतनि। कहि दियौन, हम सब ठीक छी। दूचारि दिनमे सभ ठीक भऽजएतै।

पत्निक वातसं मास्टर साहेबके साहस बढ़ैछै। फोन पर दृढ़तापूर्वक कहैत छथि -मीत, कोनो चिन्ताक वात नै। सभकेओ ठीक छै। जहां तक गीतक बात छै, मधेश आन्दोलन सफल होब दिऔ, दुनू मीत मीलिकऽ फेरसं गौनाई शुरु करब। एखन रहब दीअ...।'

मास्टर साहेबक बात जगमोहनके नीक नहि लगलैक। ओकरा लगैछै मीत टारि रहल अछि। फेर कहैत छैक - हम ठीके आन्दोलन छोड़ैत छी आ अहांके लेब अबैत छी।'

मास्टर साहेब सेहो भावुक भऽ गेलाह -'मीत, हमरे सप्पत अछि जे अहां आन्दोलन छोड़ब। ओहिमे हमर सम्पूर्ण परिवारक भविष्य अछि। ने अहां हमरा लेब आएब ने छोड़बाक बात करब, बस !' आ फोन राखि दैत छथि।

आइ पहिलबेर मास्टर साहेब अपन मीतकें एहन कठोर बचन कहने छलथिन। आगांमे हतप्रभ भऽ ठाढ़ पत्नि मास्टर साहेबक आंखिमे फेरसं डबडबा आएल नोर त नहि देखि सकल, मुदा आंखि फेरिकऽ दोसर कोठरीमे चल जाइत टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेलीह।

□□□□

३

जुलुशमे सभ तरहक लोक सामेल अछि। बहुतो त नगरक जानल मानल लोक सभ अछि जे मधेश आन्दोलनमे एक्यबद्धताक हेतु सड़क पर अछि। ओ संयमित अछि। संघर्ष समितिक बैनर संगे शालीनतासं नारा लगबैत आगां बढ़ि रहल अछि। किछु उकठी छौडा़ सभ अछि, जत्त कतौ प्रहरी के देखैत अछि जोर-जोरसं चिचिआए लगैत अछि - प्रहरी प्रशासन, मुर्दावाद ! गृहमंत्री- राजिनामा दे...। माहौल एहन जे केओ ककरो रोकियो ने सकैत अछि। किछु युवा ईटक टुकड़ी, छोट-छोट पाथर हाथमे लऽ ठीकाकऽ प्रहरीक कपारपर निशाना साधैत अछि। दंगा प्रहरी सभ हाथक अवरोधसं तकरा रोकैत लाठी बजारैत दौगैत छैक। सभ लत्ते-पत्ते भगैत अछि। ई खेल लगभग प्रत्येक चौकपर खेलल जा रहल अछि।

जुलुशमे नगरक दक्षिनबारी टोलक कहबैका कामेश्वर सिंहक बेटा सेहो रहैत अछि। कहांदन कामेश्वर सिंह जुलुशक तैयारी आ माटियातेल, पेट्रोल किनबाक लेल पाइयो खूब खर्च कऽ रहल अछि। ई त एखन लोकके बुझल नहि छैक - एहि उदारताक कारण की छैक। सांचे ओ मधेश आन्दोलनमे लागि गेल अछि अथवा आन्दोलनकें हिंसक बनएबाक लेल चालि चलि रहल अछि। समाजमे सिंहक गतिविधि पर एखनो लोकके बहुत बेसी विश्वास नहि छैक। तएँ कतेको शंका उठैत-मेटाइत रहैत छैक। मुदा ओकर रुतबा एहन छै जे केओ किछु बाजि नहि पबैत अछि।

ओ की कर' चाहैत अछि से त पता नहि, मुदा ओकर बालक राजिव सिंह एखन मधेश आन्दोलनक नामपर जी-जान लगौने अछि। कोनो एहन दिनक जुलुश नहि हएतै, जाहिमे ओ आगां नहि रहल हो।

संगी सभ कए दिन रोकबो कएलकै -'भाइ, आन्दोलनके बात छै। गोलियो-गठा चलैत रहैत छैक। वापक एकटा बेटा छीही, किछु भेलौ त ... ।'

राजिब बातके टारैत हंसि दैत छलै - भाइ हम सभ एहन बात सोचिकऽ ओइ महान मधेशी शहीदप्रति अन्याय कऽ रहल छिऐ। की ओहिमे केओ नहि रहै जे अपन वाप-मायक एसगरि बेटा छल। अपन भूमिक नामपर, अपन अस्मिताक नामपर, अढ़ाई सय बर्षक शोषणक विरुद्ध आवाज बुलंद करबाक नामपर जीवन उत्सर्गकऽ देलकै। खबरदार जे एहन बात फेर बजिहे। तोरा सभके डर होइत छौ, धूरि जो। मधेशक लुप्त भेल प्रतिष्ठा जा धरि आब नै धुरतै हम एहिना सडक पर रहबै...।'

संगी सभ चुप्प भऽगेल। राजिबकसंग ओहो सभ जोर-जोरसं नारा लगब लगलैक। गाम-गामसं लोक जुलुशमे नारा आ बैनर संगे फेटाइत गेल, जन समुद्र बनैत गेलै।

जुलुशक सहभागी कोनो व्यक्तिक हाथमे राखल मिडियम बैण्ड रेडियोसं समाचार आबि रहल छलैक -'आन्दोलनक चौदह दिनमे अठारह गोटे शहीद भऽ गेल अछि, पचासो गोटेक अंगभंग भऽगेलैए आ एक हजारसं उपर घायल अछि। सभक उपचारके हेतु कोष खडा कएल गेल छैक, जाहिमे धमाधम चन्दा प्राप्त भऽ रहल छैक ...।'

राजिब पलटिकऽ अपन संगी दिश तकैत अछि। संगी मुस्किया दैछ आ राजिबके उत्साह बढ़बैत कहैत अछि -'हमर उदेश्य तोरा पाछा लऽ जएबाक नहि छल। दिन-दुनियांक बात मात्र कहने रहियौ। आ तों कोना बुझि लेलही, तोरा छोड़ि हम सभ आन्दोलनसं पाछा भऽ जाएब...।'

ताबतमे पाछां किछु हल्ला भेलैक। चौकपर एकटा दोकानक ताला तोड़ि देल गेल छलै आ ओइ महक सामान सभ हाथे-हाथे बोरा-बोरीमे भरने किछु लोक भागि रहल छल। पता लगलै ओ एकटा नेपाली भाषी पहाडीक दोकान छलै। जुलुश नमहर रहै आ अगिला लोक बहुत आगां चलि गेल छल। अपरान्ह भऽ रहल छलैक। एहनमे किछु गोटे गओं सुतारि लेने रहय।

'भाइ आब बुझलिऐ। किछु अनचिन्हार छौडा सभ कांखतर बोरा आ ओहिमे नुकाकऽ हथौड़ी सभ कैला रखने छल। हमरा त लागल छल मधेश आन्दोलनक उत्साहमे काम करिते-करिते जुलुशमे आबि गेल अछि। नहि, ई त लुटेरा सभ लगैए'-राजिवक संगी विनोद बातके गमैत राजिवसं कहैत छैक। राजिव गंभीर भऽ जाइछ -'मधेश आन्दोलनके एहने तत्व सं खतरा छैक। नेता लोकनि जाहि उद्देश्यसं आइ दशकोंसं मधेश मुदाके उठौने छलाह आ माघ २ गते काठमाण्डूक मण्डलापर अन्तरिम संविधानके किछु दफा जरएबाक साहस कएने रहथि तकर उद्देश्य एना कोनो वासिन्दाक प्रति दुर्व्यवहार आ लुटपाट नहि रहैक। लड़ाई त शासक सने रहै, एतुक्का वासी सभसं नहि ने। तखन एहने काज एकरा बदनाक करतै।'

'से कोनो कसरि छोड़ने छैक। फलांक घुसपैठ त चिल्लांके सहयोग कहबे करैत छैक आठदलके नेता सभ'- विनोद कहैत छैक।

भीड़ महक एकटा युवक अपन संगीके कहैत विनोद सुनैत अछि आ राजिवके सेहो ओन्हर ध्यान दिअ कहैत छैक। युवक अपन साथी सभसं कहैत अछि -हे, देख अएलौ मस्टरबाके घर। सार, नेपालीमे हमरा सब साल फैलकऽ दैअ। एहे मौका हौ भाइ, चुकाले'-आ हाथमहक पाथर जोरसं छतपर फेकैत अछि। दोसर संगी सेहो पाथर फेकैत छैक जे खीड़कीमे धड़ामसं लगैत छैक। राजिवक मोन घोर भऽ जाइत छैक। ओ बड़बड़ाइत आगां बढ़ि जाइत अछि -'पता नहि ई सभ मधेश आन्दोलनके आगां बढ़ देतै कि नहि।'

□□□□

४

१ जून २००७। आइ नगरमे चहल-पहल खूबे बढ़ल अछि। विगत सात-आठ मासस जाहि आन्दोलनक कारणें जनजीवन अस्तव्यस्त छलैक आइ तकर पूर्णरुपेंण पटाक्षेप होब जारहलैक अछि। सरकारक वरिष्ठमंत्रीक संयोजकत्वमे वार्ता टोली बनल छैक ओ आइ मधेश आन्दोलनक वार्ता टोलीसं सहमति करत आ तत्कालके लेल आन्दोलन स्थगित कऽ देल जएतैक।

विगत आठमाससं बन्द, हड़ताल कएबेर भेलै, कएबेर बन्द भेलैक। मुदा जुलुश, नारा निरन्तर जारी रहल। पुलिससं मुठभेड़ो होइते रहलैक। मधेशी सपूत शहीद होइत रहल। मुदा अन्ततः सरकार आ विश्वो मधेश आ मधेशीके चिन्हलक। ओकर समस्या समाधान करबाक लेल दबाब बढल आ आइ वार्ता होब' जा रहलैक अछि।

मधेशी वार्ता टोली यात्री निवासमे आबि गेल अछि। मधेशक मसीहा बनल संयोजक, कार्यकर्ता एवं विद्वत जनसं आबभगत पाबि रहल छथि। सभक मनमे जिज्ञाशा छैक - समझौता केहन आ कोन मुदापर हयत। मधेशक भाव ओहिमे रहतैक कि नहि। बढ़का दबाव छै वार्ता टोलीपर। सरकारी वार्तांटोलीक संयोजक आइ औताह आ आर सभ आएल छथि।

यात्री निवासमे तैयारी चलि रहल छैक। संयोजक महोदय अबिते स्थानीय एकगोटे वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकारके रातिए बजा पठौने छलखिन्ह। ओ भोरे अबैत छथि। मधेश आन्दोलनमे पूर्णरुपें लागल - भिजल रहलासं बहुतो अनुभव संयोगने छथि। यात्री निवासमे पहुचिते कार्यकर्ता हुनका गोप्य कोठामे लऽ जाइत छन्हि। कोठरीमे संयोजक आ एक गोटे वार्ताटोली सदस्य रहैत छथि। हुलसिकऽ हुनक स्वागत करैत ओछाओनपर बैसबाक आग्रह कएल जाइत छन्हि। संयोजक जी अपन करिया बेगसं किछु पन्ना बहार करैत छथि, जाहिमे टाइपकएल गेल २५ बुंदाक सहमतिपत्र होइछ। एहिसं लगैत छैक - मोटामोटी रुपमे दुनू पक्षक विच वात तय भऽ गेल छैक, मात्र औपचारिकता पूरा कएल जा रहलैक अछि। तथापि संयोजकजी कागज आगां बढ़बैत साहित्यकार महोदयकें आग्रह करैत छथिन्ह - ई कागज देखि लियौ। सहमतिक बुंदा सभ छै जे हमरा सभक मांग अछि। एहिमे शब्द, भाषा आ जं जरुरी बुझाए त कोनो छुटल मांग होइ त सेहो सुधारिकऽ तैयार कऽ दिऔ।'

साहित्यकार महोदयके गौरब बोध होइत छन्हि। आखिर पतिऔ लनि त संयोजक महोदय। ओ सभमांगके गंभीरतासं पढ़ैत छथि आ लाल कलमसं शब्द, भाषाके सुधार करैत एक आधमांगके पुरा करैत छथि। तखन एकटा नव मांग जे हुनक अपनो पेशास सम्बन्धित बुझाइत छन्हि थपल जा सकैछ, संयोजकके कहैत छथिन्ह। ओ सहर्ष स्वीकृति प्रदान करैत छथि आ तखन मांग पचीस स छब्बीस भऽ जाएछ। ओ मांगपत्रक कागज संयोजकके जिम्मा लगा दैत छथि। संयोजक ओकरा टाइप करबालेल विश्वस्त कार्यकर्ताकें दैत छथिन्ह। साहित्यकार विदालैत वार्ताक शुभकामना दैत छथिन्ह। विदावारीभऽ जाइछ। संयोजक फोनसं ककरो निर्देश देब लगैत छथि।

८ ८ ८

दिनभरि नगरमे वार्ता आ सहमतिएक चर्चा छैक। जनजीवन सामान्य भऽ गेल छैक। सभक अनुहारपर एकटा विजयक उल्लास छैक। सद्भाव कही कि विजय जुलुश निकालबाक तैयारी सेहो युवा सभक विच चलि रहल छैक।

मास्टर रमेश उपाध्याय जेना कएक मासपर भरिपोख भोजन कएने होथि। गमछासं हाथ-मुँह पोछैत बैठक कोठामे अबैत छथि आ

पत्निके सोर पाड़ैत छथिन्ह । पत्नि थाड़ीके कलपर राखि अबैत छन्हि । 'की, वात छै ?' पत्नि पुछैत छथिन्ह । 'नै, कहलोंह कनेक लभका कुर्ता लाउ । बाजार धुमि अबैछी । लगैए, आब सभ संकट टरल । लोक चैनसं रहत'-मास्टर साहेबके अनुहारपर सन्तोष आ सुरक्षाक मुस्कि छन्हि ।

एहिविच मास्टरसाहेब बाजार नै जाइत छथि से नहि । बाजारो जाइत छथि, इस्कूलो जाइत छथि । संगी-साथीसं भेटोघांट होइत छन्हि । मुदा जे उन्मूक्तता पहिने महशूस होइत छलनि से एखन नै बुझाइत छन्हि । लोकसं नजरि चोराकऽ निकल' चाहैत छथि । पहाडी समुदायके प्रति जाहि तरहक विभेदक बीआ छिड़िआ गेलैए, तकरा समेट' मे समय लागि सकैछै । विनु किछु कएनहि ओ अपराधी जकां रहबा पर विवश छथि ।

मुदा आइ ओ उन्मुक्त भऽ बाजारमे घुम' चाहैत छथि । मित्र सभक संग गपसप कर' चाहैत छथि । वार्ताक पश्चात उठ'बला मधेशक खुशीमे स्वयंके सामेल कर' चाहैत छथि ।

घरबाली कुर्ता आनिदैत छन्हि । ओ तकरा पहिरी जेवीसं सोपारीक एकटा टुक बहार कऽ मुंहमे धरैत छथि । गमछाकें ठीकसं दुनू कान्हपर धऽ निचां मिलबैत छथि । धोती त पहिनहीसं पहिरने रहैत छथि आ आंगनसं बहार भऽ जाइत छथि ।

□□□□

५

नगरक सरकारी गेस्टहाउसमे पत्रकार सभक भीड़ छैक । बाहरके सामान्य व्यक्तिके भितर जएबाक मनाही छैक । सरकारीवार्ताटोली, आन्दोलनरत पक्षक वार्ताटोली मात्र भितर कोठरीमे बैसल अछि । पत्रकार सभकें बहरिया बरण्डा आ निचांक अंगनईमे रहबाक सुविधा देल गेल छैक । ताहुमे प्रहरी सभ निगरानी कऽरहल छैक, एम्हर नहि त ओम्हर नहि । सुरक्षा व्यबस्था अत्यन्त कडा अछि ।

जहिना-जहिना समय बीति रहल छैक पत्रकार सभक उत्सुकता बढ़ि रहल अछि । विगत छः माससं चलैत मधेश आन्दोलनसं लोक अस्तव्यस्त अछि । जन-जीवनमे असहजता आबि गेल छै । तएँ अझुका वार्तापर सौंसे मधेशक नजरि छैक ।

पत्रकारोसभ एहि समाचारके अपन-अपन समाचार माध्यममे पहुँचएबाक लेल उताहुल भेल अछि । ककर पहिने पहुँचैत अछि । कोनो नव समाचारक गन्ध भेटौक कि टी.भी.क पर्दामे निचांक ब्रेकिंग न्यूजमे ताजा समाचारक पंक्तिमे लिखा सकैक ।

वार्ताक सफलता आ असफलता लऽ कऽ पत्रकारो सभमे खुब घोंघाउज भऽ रहल छैक । पक्ष-विपक्षमे तर्क देल जा रहल छैक । सभ अपन-अपन तर्कसं दोसरके प्रभावित करबाक काज क रहल अछि । तखने वार्तामे बैसल ́कगोटे मधेशी नेता बहराइत अछि ।सभ पत्रकार ओम्हरे दौड़ैत अछि । लगैछै किछु भेलैए जरुर । मुदा ओ कोनो विशेष कामसं सुरक्षासाथ बाहर जा रहल होइत अछि । पत्रकार सभ निराश भऽ फेर वहसमे लागि जाइत अछि ।

भितर वार्ताक संग संग चाह-पान आ जलखईयो चलिते हएतैक । मुदा बहरामे प्रतिक्षारत पत्रकार सभके त भुखे हाल बेहाल भेल जा

रहल छैक। से आओर बेसी काल प्रतिक्षा नहि कर' पड़लै। मधेशी वार्ता टोलीक संयोजक महोदय बहरएलाह। घेरलक पत्रकार लोकनि। ओना हुनक अनुहारपर छिड़िआएल उदासीसं कोनो नीक सूचनाक आशा नहिएसन हएत से पत्रकार सभ अनुमान लगा लेने छल। तथापि पुछैत अछि -'की भेल वार्ता ?'

'बुढ़ियाक फूसि ! हमसभ जे मांग देने छलिऐ, ताहिमे आधा-छीदा मांगपर मात्र सहमति देखा रहल अछि सरकार। मुख्य मांग छुटले रहि गेल अछि। तएँ वार्ता भंग भऽ गेल अछि। हमरा सभक आन्दोलन और कडाईसं जारीए रहत।' -नेता जी उद्घोष करैत छथि। हुनक उद्घोष मधेशक हेतु सशक्त आह्वान भऽ रहलैए एखन। तएँ पत्रकार सभक हेतु ई समाचारो कोनो कम महत्वक नहि छैक। सभ अपन-अपन संचार सामग्री समेटैत समाचार सम्प्रेषणक हेतु बहरा जाइत अछि।

□□□□

६

मास्टर साहेबक घरमे सभ चिन्तित अछि। विजय जुलुशके देखबालेल घरसँ खुशी-खुशी गेला ह'। पता नै एखन कत्त छथि। कहांदन वर्तो नै भेलै। आब फेर जुलुश, हुड़दंग होतै। एहिमे त आरो होहल्ला होएतै - पत्नि कतेकबेरस अपने बरबरा रहल छथि। धीआपूता सटिकऽ बैसल छन्हि।

तखन दूरक दिआद अबैत छैक मास्टर साहेबके। सरिताके उदास देखि पुछैत छै - 'भाउजु, दाजु कहां हुनुहुन्छ ?' (भौजी, भैया कत्त' छथि ?)

'हमहुं त हुनके लेल फिरिशान छी। कहै छै वातो नै मिललै। बाबू, देखियौ अहीं कतौ। कोनो झेलमे नहि फंसि जाए।' - सरिता देओरके आग्रह करैत छैक। 'ठीक छै' - कहि ओ आगा बढ़' चाहैत अछि कि झमारल, झखारल मास्टर साहेब दुहरी पर जुमि जाइत छथि। अपन होश त गुम्म छन्हि मुदा पत्नि, भाइ आ धीआपूताके सन्तोष दैत परतारैत छथि - हौ, राजकाजमे एहिना होइछै। एखन कएबेर बैसत, कएबेर उठत। मुदा सहमति त हएबे करतै। देशके सवाल छै। मधेशक प्रतिष्ठाके सबाल छै।'

बात बजैत-बजैत मास्टर साहेब दुरुखीमे राखल खुरसी पर वैसि रहैत अछि। हुनका सकुशल देखि सभक अनुहार पर सन्तोषक लक्षण देखि पड़ैछ।

मास्टर साहेब भाइके सम्बोधन करतै अछि - 'नरेन्द्रे, कह त हम पहाड़िया सभ एहि मधेश आन्दोलनसँ एतेक भयभीत किएक भऽ गेलिऐ ?'

'एहि दुआरे जे हमरा सभ पर आक्रमण होब' लागल अछि। तरह-तरह के धमकी आब' लागल अछि।'-नरेन्द्रे एकटा ख'शरसी घीचि क बैसैत कहैत अछि।

'त ई धमकी, आक्रमण किएक ?'

'ई त हमरा नहि बुझल अछि। हम सभ त चुपचाप बाप-दादाक घराडी पर एकटा मधेशीए जकां बैसल छी। एक्के संग रहैछी, एक्के संग खाइछी।'

'तोहर बात सांच छौ बाउ ! मुदा पूर्वेस काठमाण्डूक शासक सभ विभिन्न बहानामे अपन आदमी सभके मधेशक सरकारी जग्गा दऽ दऽ कऽ नै बैसौलकै। बीघाक बीघा जमींदारी नै देलकै। बेगारी खटबै, सलामी ठोकबै। कहलमे नै रहै त खल्ला उघारि दैक। कम शोषण नै कएने रहै ओइ समयके सामन्त सभ। पंचायत कालमे त आरो अनर्थ भऽ गेलै जखन सुकुमबासीक नामपर, विर्ता, हुकुम प्रमाङ्गीक नाम पर बन, जंगल आ जमीन सभपर ओम्हरका पहाड़िया सभके बैसा देलकै। ई सभ उचित रहै ?'

नरेन्द्रे चुप्प भऽ जाइत अछि। ओकरा दाजूक बातकें समझबाक लेल माथपर जोड़ देब पड़ि रहल छैक। ओकरा बरु आश्चर्य लगैछै, दाजु आइ एहन बात किए बाजि रहल छथि। तएँ किछु जवाव नै दैछ।

'मधेश आन्दोलन जखन शुरु भेलै, लोकमे हिम्मत अएलै, अपन अधिकारक हेतु, सजग भेल। तखन सैयौं वर्षक जे शोषण आ उत्पीड़न रहैक ओ एहि घृणाक रुपमे एखन सोझामे आबि रहल छैक। एकरा अस्वाभाविक किए मानल जाए' - मास्टर साहेब अपन मोनक भरांस नीकालि रहल छथि।

नरेन्द्रे साहस करैत बजैत अछि - 'काठमाण्डूक शासक सभक अपराधक फल हम सभ किएक भोगै छी ? हम सभ त कोनो जमीन नै छीनने छिऐ, ने कोनो तरहक झगड़ा, बातमे लागल रहैत छी।'

मास्टर साहेबक तर्क छन्हि - 'तोहर बात ठीक छौ। मुदा शासक वर्गक संग लड़ाई त नमहर चलतै, हम सभ ओहने मुंह-कान-नाक बला सभ अगेमे छिऐ। जे सोझामे सएह बोझामे। लदनियां हमरे सभ पर लदा रहल अछि।'

'ई कहिया तक चलतै दाजू' - नरेन्द्र निराश होइत पुछैत छैक।

'रुकतै, ई क्रम रुकतै। हं, एहि संक्रमण कालमे बहुतो के क्षति बेहोर' पड़तै। जखन मधेशी मित्र लोकनि, एकर मुक्तिदाता लोकनि बुझथिन्ह जे सरकारक बदला अपने भाइ, दिआद आ मित्रकें प्रताड़ित कऽ रहल छी तं सचेत हएताह। बाउ, तहिआ तक धैर्य त राखही पड़तौ।'

नरेन्द्रे भैयासं विदा लऽ दुरुखीस नीकलि जाइत अछि। किरन, दुनू छोट-छोट भाइ आ बहिनक संग बापकें विस्मयक नजरिस देखैत अछि। आ मास्टर साहेब एहि सभसं अनभिज्ञ खुरसीए पर निढ़ाल भऽ आंखि मुनि लैत अछि।

□□□□

७

आन्दोलन रुकलै नहि। ठाम-ठाम मुठभेड़क खबरि आबि रहल छैक। सरकारो जेना मधेशी नेताक ताकत तौलि रहल हो। बात आगां बढ़बैत अछि, फेर पाछा छीपि लैत छैक। चारु भरसं दबाब छैक, मुदा आलटाल कऽ रहल अछि।

संघीयता आ राज्यक सभ अंग पर मधेशीक पहुंच सुनिश्चित हएबाक प्राथमिक शर्त वार्ताक राखल गेल अछि। मधेशी सोनितमे आएल ज्वार एखनो शांत नहि भेल छैक। जोर अजमाइश जारी छैक। शहीदक संख्या बढ़िए रहल छैक।

आन्दोलनक अनिश्चिततासं बहुतोके उठीवासक समस्या आबि गेल छैक। काम-धाम चौपट भऽ गेल छैक। डेढ़ मासक बाद सरकार जगलै आ २५ जुलाई २००७ कऽ धूलीखेलमे दोसर चरणक वार्ता भेल। सरकारी टीम दू दिनक तैयारीक समय मंगलकै आ २८ ता.क पुनः बैसल। हाथ लागल शून्य। ५ अगस्त २००७ कऽ तेसर बैसार भेल पार्क रीसोर्ट भीलेज, बूढ़ानीलकंठ। माओवादी प्रतिनिधिक कारणें फोरम वार्ता छोड़ि देलक। प्रधानमंत्रीसं भेंट भेलैक मधेशी संयोजककें। २० अगस्त कऽ फेर चारिम बेर वार्तामे बैसल। मुदा आन्दोलनी शक्ति वार्ता छोड़ि सरकार पर गंभीर नहि हएबाक आरोप लगबैत ३१ अगस्त धरि अल्टीमेटम देलक। जं एहि बीच वार्ता नहि तं भयंकर आन्दोलन हयत - मधेशी नेताक चेतौनी छल।

अन्ततः ३० अगस्त २००७ कऽ २६ बुंदे सहमति भेल। सौंसे देश राहतके सांस लेलक। तत्काल सभ तरहक आन्दोलन स्थगित भऽ गेल छैक। युवा सभ ई समाचार सुनिते हेंजक हेंज जुलुश बना शहरमे

नीकलि पड़ल। नारा लाग' लगलैक - मधेशी एकता - जिन्दावाद। मधेश सरकार - जिन्दावाद। ढोल-पीपही, बैण्डबाजा सभ जुलुशक आगां-आगां चलैत। अबीरक छीटा लोकक गाल आ कपड़ा दुनूके लाल कैने जा रहल छैक। लगैछ - सौंसे संसारक उपलब्धि अपना छातीमे भरि कऽ सड़कपर लोक झूमि उठल अछि। दू सय चालिस वर्षक दासत्व सन जिनगी, मधेसीक अपमानजनक सम्वोधनकें हृदयमे समयने मधेशी समुदाय आइ जेना ठीके उन्मूक्त भेल हो।

मुदा एहि उपलब्धिक खुशीमे एक गोटे एहनो मधेशी अछि जे भितरे-भितर गलि रहल अछि। मधेश आन्दोलनमे निरन्तर लागल जनमोहन अधिकारी। खिन्न भेल घरमे पड़ल अछि। कएकटा बजाबा आबि गेलै जुलुशमे जएबा लेल। मुदा ओ मोन ठीक नहि अछि कहि टारि देने छैक। वास्तवमे ओकरा आइ एक्केटा बातके चोट लागल छै - ई आन्दोलन आर जे किछु देने होइक तइसम बुंदाक सहमति नहि कऽ सकल छैक, जाहिमे संवेगात्मक रुपें लिखल रहैत - एक मीतकें दोसर मीत संग रहबाक स्वतन्त्रता सेहो रहबाक चाही। अर्थात् जेकर लंगोटिया मीत मास्टर रमेश दिन-दिन दूर भेल जा रहल छैक। संगमे बैसबाले ओकरा हिचक होब लागल छैक। खाइ छल अपन आंगन, हाथ सुखबै छल हमर आंगन, आब तं पानो संगे खएबाक अवसर नै भऽ रहल अछि। कतेक दब्बू बना देने छैक ओकरा ई आन्दोलन ' - जगमोहन मोनके काबू राख चाहैछ अछि, मुदा भऽ नहि रहल छैक।

'नहि, चलैछी एक बेर अपनेसं मीतके बुझबै छिऐ' - जगमोहन एहि आन्दोलनी माहौलमे कोनो तरहक खतरा उठब' चाहैत अछि। तैयार भऽ घरसं बहार होइत अछि। सड़क पर डेग रखिते एक हुंज युवा सभ सौंसे देह लाल कएने, नचैत-गबैत आगांमे आबि जाइत छैक। एक गोटे चिचिआ उठैत छैक - 'वाह नेताजी छौ। उठा।' छौड़ा सभ दोगैत अछि। मुंह आ देह पर अबीर मलैत छैक आ कान्ह पर उठा नारा लगब' लगैछ - जगमोहन नेता - जिन्दावाद। जगमोहन के लगैछै ओ ओहि जुलुशमे नाचौ-गाबौ आ कि कपार पीटो। मुदा ओ

किछु कऽ नहि पबैत अछि। जुलुशक एकटा अंग भऽ कऽ मुंह पर जवर्दस्ती हंसी लबैत उधिआइत जुलुशक संग बह लगैत छथि।

* * *

मधेशीक खुशी कहां टिक' देलकै नेपालक सरकार। फेर एक्के मासक बाद पुनः नयां आन्दोलनक घोषणा कर पड़लै। सहमतिक छबिसो बुंदा सिंहदरबारक फाइलमे दबा देल गेल रहै। फरवरी ९, २००८ ई. कऽ तीन मधेशी पार्टीक मोर्चा बनल आ संयुक्त मधेशी मोर्चा द्वारा अनिश्चितकालीन नाकाबन्दीक घोषणा भेल। पहिल बेर नेपालक शासक लोकनि त्राहिमाममे पड़ि गेलाह। सोरह दिनक नाकाबन्दीसं राजधानी काठमाण्डूमे हाहाकार मचिगेल - ने, चाउर, गैस आ तरकारी। सभ बन्द। कच्चा पदार्थ बन्द, खाद्यान्न बन्द, इन्धन बन्द। चुनावक घोषणा भऽ गेल रहै। तखन बाध्य भऽ १६ गते फागुन कऽ आठ बुंदे सहमति भेलै आ सम्विधान सभाक निर्वाचनक तैयारी प्रारंभ भेल।

आन्दोलन शांत भऽ गेलै। सभ पार्टी चुनावमे गेल। मधेशी पार्टी फुटियो कऽ नीक संख्या मे आएल। देशमे नव अध्यायक शुरुआत भेल।

जगमोहन अधिकारी आ मास्टर रमेश उपाध्यायक संग-संग किरन आ राजिवक हेतु सेहो अपना अनुकूल किछु हएबाक संभावना देखा पड़लैक। चारुक मोनमे प्रसन्नता, उमंग आ सुखद आकांक्षाक जन्म होब लगलैक।

मास्टर रमेशके अपन धरती प्रति फेरस मोह बढ़लै, जगमोहनकें फेरस मीतकें छातीमे साटि संगे गीत गएबाक अवसरक भान होब' लगलै, किरनके राजिवसं जुड़बाक पक्का विश्वास भऽ गेलै।

चारु दिश खुशी, सम्पूर्ण मधेशमे उमंग नाच' लगलै।

□□□□

८

सहमति भेलाक कएक मास बाद। शहरक एक भवनमे दश-बारह साइजके कोठरी। निचांमे सतरंजी, तोसक आ जाजिम बिछाएल। कोनमे चारि गोट भ्फोड़ा धएल। ओछाओन पर देवालस ओंगठल चारि युवक। एकटाक हाथमे सिकरेट। चारु गंभीर छलफलमे।

सिकरेटबला दम सोंटैत बजैत अछि - नेताजीके आदेश छैक। सहमति भेला एतेक दिन भेला भऽ गेलै, कोनो सुधार नै भऽ रहल छै। ई खस सभ मधेशीके अधिकार एना क' नै देतै। हमरा सभके सशस्त्र रुपसं लड़' पड़तै। एकरा सभ पर आक्रमण कर' पड़तै। कब्जा कर' पड़तै। तखने ई सभ सुनतै।'

'ई त बड़ जोखिमके काज छै। हम मुठ्ठी भरि लोक प्रहरी-प्रशासनसं लड़ि सकबिही ?' - दोसर युवक टोकलकै।

पहिलाक युवक सिकरेट मिभ्फबैत बाजल - 'जाहिया माओवादी जनयुद्ध शुरु कएलकै त कतेक रहै। वादमे सेनाके उपर भारी पड़ लगलै। भाइ, हिम्मत चाही। सभ ठीक भऽ जएतै।'

तेसर युवक बाजल - 'ठीक छै, एकरालेल सेना, कार्यकर्ता तैयार कर' पड़तै जे लड़ि सकए, जान तरहत्थी पर लऽ कऽ संघर्ष कऽ सकए।'

पहिल युवक - 'हं, इहो ठीक बात छै। एकरा संग-संग हथियारो चाही।'

'आ, एकरा सभके लेल पाइ चाही, हिम्मत बला युवक चाही' - चारिम जे बडी कालसं गुम्म छल, बाजि उठल।

पहिल बाजल - 'ठीक कहै छौ करिया ! एकरा लेल पाइ चाही आ जान प' खेल बला युवक सभ।'

दोसर युवक - 'इ सभ कत्तस भेटतै। नेताजी देतै कि ?'

पहिल युवक - 'नेताजी, तत्काल समूहके किछु पाइ आ एक-दूटा हथियार दऽ सकैछौ। और त अपने लाब' पड़तौ।'

'केना रै, कत्तस लैबही पाइ आ आदमी !' - चारिम अविश्वाससं बजैत अछि।

'जेना हम तों समूहमे आएल छही, तैहना दोसरो भाई एतैकिने। अपन मधेश प्रदेश पाब' के लेल किछु बलिदान त करही पड़तौ। आन्दोलनमे जे चालिसस उपर शहीद भेलै ओकर कोनो महत्व नै ' - पहिल भावुक भऽ चारुदिश तकैत बाजल।

एक क्षण सभ गुम्म भऽ गेल। जेना किछु सोचि रहल हो। तकरा बाद पहिल, जे सम्भवतः एहि समूहक लीडर छल, बाजल - आब पहिने पाइ असूल पड़तौ। बजाप्ते अपन समूहक पैडमे एतुक्का व्यापारी, पहाडी समुदाय सभके चिट्ठी दही आ पाइ मांग। धमकी दही, अपहरण कर। होइछौ त एक आधके घायलो कर। डर उत्पन कर। तखन पाइ अऔतौ आ ई सशस्त्र आन्दोलन आगो बढ़तौ। हथियार हम लाबि देबौ। काल्हि हम ओम्हर जाइछी, नेताजीसं बात कऽ सभ किछु मिला अबैत छी। ठीक किने ?'

'हं, ठीक छै। अपन अधिकारक हेतु संगठित हएब जरुरी छै। चिनीकटोरा खएलासंग भुख नै मेटएतै, भरिपेट भोजन चाही, जे ई पेटवला सभ काठमाण्डूसं निचां देखिए ने सकैए। भाइ हएतै, जरुर आन्दोलन हएतै, मर आ मार के आन्दोलन हएतै...।'

पता नै चारुके केना कऽ उर्जा आबि गेलै। सभ ठाढ भऽ गेल आ चारु एक्के स्वरमे चिचिआ उठल - जय मधेश '

खिड़की केबार बन्न ओइ कोठरीमे नारांक आवाज घुरिया क' नाचि उठल। चारु अपन-ओछानके ठीक कऽ सुतबाक उपक्रम कर' लागल।

□□□□

९

लोकमे फेर एकबेर रोष उत्पन्न होब' लागल छैक। सहमतिक अनुसार सरकार मधेशी सभक मांगके ठीकसं सम्बोधन नहि क' रहल छल। मधेश आन्दोलन, जकरा लोक तेसर जन आन्दोलन सेहो कहैत छैक, लोकमे चेतना त लओलकै। बरु नेपालक एकटा पूर्व प्रधानमंत्रीक ई कथन जे मधेशी कायर होइत अछि के कड़ा चुनौती दैत पचासो मधेशी शहीद भऽ गेल अछि। अपन मांग पर सरकार के झुका देलक। मुदा आब तकरा लागु करबामे ढिलाई कऽ रहल अछि। हं, संघीयताक मांगके अस्वीकार कऽ सकबाक स्थितिमे नहि अछि, ई मधेश आन्दोलनक सभसं पैध विजय त छैहे !

शहरमे, गाममे चन्दा मांगब शुरु भ' गेल छैक। पहिल चरणमे सरकारक निस्क्रियता देखि लोक कम-वेस कऽ देबो शुरु कऽ देने छैक। चलु वार्ता आ सहमतिसं नै त हथियार आ आक्रमणसं त हो। अद्भूत मानसिकता छै लोकक। जाहि आतंकसं पीड़ित भऽ शांतिक सांस लेबाक अवसर पौने छल, आइ सरकारी नीतिसं आक्रोशित भऽ मधेश प्रदेशक अभियानी सभ पर सहानुभूति देखा रहल अछि - ई जनैत जे एकरा सभक हाथमे बन्दुक छै, जकर गोली जाति, समूह आ क्षेत्र देखि कऽ नहि चलै छै।

सम्पूर्ण मधेशमे विभिन्न समूहक नामपर चंदा, अपहरण, धमकी शुरु भऽ गेल छै। लोक आब त्रसित होब' लागल अछि। सभक मोनमे एकटा यक्ष प्रश्न नाच' लागल छै - की मधेश आ मधेशी प्रति, एकर उद्धार प्रति समर्पित समूह सभ मात्रे ई चन्दा, अपहरण आ हत्यामे सामेल अछि अथवा किछु दोसरो तरहक समूह सक्रिय भऽ गेल अछि !

प्रहरी प्रशासन अपना जनिते प्रयास कऽ रहल बतबैत अछि। शिकायत सुनैत अछि, लिखैत अछि। परिणाम शून्य। समाजमे आब त आतंक पसर लागल छैक। पहाड़ी समुदायक लोकपर बेसी चाप बढ़लैए। किछु त पाइ कौड़ी दऽ बांचल अछि। बहुत त अपन घर-घड़ारी औन-पौन दाममे बेचि पड़ा गेल अछि। पड़ोसियो तकके खबरि नै भेलै केना आ कत्त चल गेल।

सामाजिक, राजनीतिक विश्लेषक लोकनि मधेश आन्दोलनक आड़मे किछु अपराधी प्रवृत्तिक लोक ढाढ़ भऽ गेल हएबाक निष्कर्ष निकाललक अछि। ओ मात्र मौज, मस्तीके लेल चन्दा, अपहरण आ हत्याधरि कऽ बैसैत अछि। मधेश आन्दोलन, मुक्ति ओकर आधार छै से ठोस कहल नहि जा सकैछ। बरु समाज एहने संगठनसं बेसी पीड़ित अछि। जाहि संगठन पर मधेशी समाज विश्वास कएने छल, ओ जेना कातमे पड़ल जा रहल अछि। हड़कंप मचब' बला आगु आबि गेल अछि।

सामाजिक सौहार्दता पर ग्रहण लागल जा रहल छैक। एक दोसरके शंकाक नजरिसं देखब शुरु कऽ देने अछि। पुस्तौं-पुश्ताक ई सिनेह बन्दूकक एकटा गोलीसं एना कऽ भसिआ जा सकैछ ? कोना कऽ समटाओत ग' सभ सम्बन्ध एकसूत्रमे फेरसं - आइ चिन्ताक विषय इएह बनल जा रहल छैक। आ एहि चिन्तामे कतेको परिवार दिन राति पेरा रहल अछि।

□□□□

१०

एहने सन चिन्तामे भेर भेल दिन राति पेरा रहल छथि मास्टर रमेश उपाध्याय । सहमति भेलापर जुलुश संगे जोर-जोरसं मुक्त हृदयसं मधेश - जिन्दावादक नारा लगब' बला मास्टर साहेब आइ श्रापित भऽ कुहरि रहल छथि। कए दिनसं फोन आबि रहल छन्हि। दश लाख टका चाहिऐक कहांदन। कहैत छन्हि जं पाइ नहि भेटत त आंगनमे बम फोड़ि देत, धीआ-पूताके उठाकऽ लऽ जाएत। आर पता नै की की कहैत छन्हि।

अपने, पत्नि, आइ.एस.सी. मे पढ़ैत बेटी किरण सभक चेहरा उड़ल रहैत छैक। कत्तसं ओतेक पाइ लाओत ओ। संचय कोषके पाइ लऽ कऽ घर बनौलक। एखनो किछु पाइक कर्जमे अछि। घरो बेचतैक त पन्द्रह बीसो लाख नै दैतै। एखन त दामो नै दैत छैक। भऽ सकैछ पन्द्रहो लाख नै दैक। तखन बाल बच्चाके लऽ कऽ कत्त विलटत। ओकर त सभ पुश्ता एत्तहि जनमल, बांचल। एही माटीमे मिल गेल। ओ जैबो करौ त कत्त ? मास्टर साहेब दिन राति एही गुनधुनमे बितबैत छथि।

कएक दिनसं स्कूल जाइत छथि। कहुना क्लाशो करैत छथि। विद्यार्थीके की पढ़बै छै, सेहो ठीकसं धेआन नै रहैछै। घरधूरि अबैत छथि।

पत्नि उदास पतिके मुंह तकैत कहैत छैक - 'बेसी नै सोचु। मीतके कहियौन, किछु करताह। दक्षिणवारी टोल पर कामेश्वर बाबू छथि। बड़ चलल-बनल लोक छथि। कोनो बात त बतौताह। एना गललास अहीं नहि, पुरा परिवार दुखी भऽ रहल अछि।'

मास्टर साहेब नमहर सांस छोड़ैत बजैत छथि - 'से त छैहे। अपना सकमे त किछु ने छै। तखन देखल जएतै। घरे बेच पड़तै त बेचबै आ कतौ दोसर नगरमे चलि जाएब। अपन दिआद सभ कहिया ने चलि गेल। गाममे तकलो पर पहाड़िया सभ नै भेटैत छैक। भगवान के उहे लिखल छै धरती छोड़ाब के त ककर की सक छै !'

कोनटामे ठाढ़ि किरण बापक बात सुनलक त लतेपते अपन कोठरीमे भागल आ केबार भिड़ा कऽ भोकासी पाड़ि कान' लगलैक। मुदा मुंहके दाबि कऽ। किछुकाल भेलै त मोबाइलमे एकटा नम्बर लगौलक आ ओम्हरसं उतरा अएला पर बाजलि - 'राजिव, आब हमरा अहांक भेंट नहि हएत। बाबूजीके फोन कऽ कऽ पाइ मंगै छै लोक सभ। धमकी दैत छैक। बाबूजी घर बेचि कऽ कतौ अन्त चलि जएबाक बात कहै छथि।'

....

'नहि, आब संभव नहि ! बीसर' पड़त।'

ताबत मास्टर साहेब आंगनमे अरगनीपर सुखाइत अपन गमछा लेबा लेल जाइत छथि त बेटीके हिचुकैत सुनैत छथि। लगै छन्हि ई किए कनै छथि। सोर पाड़बाक मोन होइ छन्हि, फेर केवार लग जा केवारके धकलैत छथि हौलेस। केवार भितरसं बन्न रहैत छैक। ओ हल्ला कर' चाहैत छथि, मुदा भितर किछु आवाज सुनि पड़ैत छैक। किरण कानि-कानिक' ककरोस बात कऽ रहल होइत अछि - 'बाबूजीक हालति ठीक नै छै। हम कोनो हालति मे छोड़ि नै सकैछी। जे भेलै से भेलै, बस एतबे तक साथ छल।' आओर हिंचुकि कऽ कान' लगैत छैक। मास्टर साहेबके बुझबामे भांगठ नहि रहलनि जे बात कोनो प्रेम सम्बन्धक छैक। 'एना तरेतर की भऽ गेल' - एकटा आर चिन्ता सवार भऽ गेलनि। ओ चुपचाप आंगनसं बहरा गेलाह।

□□□□

११

सरिता आइ कय दिनसं बेटीके चुपचाप घरमे पड़ल देखि रहलीह अछि। पहिने त भेलै जे ओकरा देहक कष्ट छै। पुछबो कएलकै त नहि किछु हएबाक बात कहि कऽ टारि देलकै। मुदा जखन पांच दिन भऽ गेलै आ ने घरके कोनो काम करैक आने कओलेजे जाइक त मायके मनमे किछु शंका उठलैक। किरनके कोठरीमे जाकऽ ओकरा कातमे बैसि गेल। माथ हंसोतैथ दुलारसं पुछलकै - बेटी, एना गुम्म किए पड़ल रहैत छे। कोन बात भेलौअ ?'

किरन किछु ने बजैत अछि। माय जखन दोबारा पुछैत छैक त ओ उठि कऽ वहराए चाहैत छैक। आ बजैत अछि - 'नै गे ! कहने रहियौ, किछु नै होइए।'

'तखन कलेज कैला ने जाइछे। देहो हाथके सैहार नै करैछे। केना कोठरीमे किताब आ कपड़ा सभ छिटाएल छौ' - माय कोठरीमे चारुकात नजरि खिरबैत कहैत छैक।

'ई सब आब कऽ कऽ की हएतै। जखन बेच-बाइच कऽ जाही के छैक त सम्हार के कोन काम।'

'ई त अपना बशमे नै है बेटी। धमकी अबैहै। बहुतो लोकके उठीवास भऽ गेल है। तैस तोहर बाबू ई निर्णय कएलकौअ।'

'त हम कहां कहै छियौ नै जाएला। जहां-जहां ल जएबै त जएबे करबौ। तोहर आश्रित सन्तान छियौ ने।'

'एना, कटाह बात कैला बजै छे बौआ। बापक मुंह आ देह-दशा नै देखै छही। केना उजरल आ सुखाएल लगै है। दिन भरि विद्यार्थीमे लागल, मीतक ओत्त खान-पीन, गायन-वादन ! देखै छही किछु।'

किरन पुनः बैस जाइत अछि। मायक मुंह दिश एकटक देख लगैत अछि। आंखिमे नोर छलछला आएल छै। किरन भावुक भऽ बजैत अछि - माय हमर मोनमे घर-परिवारक समस्या नै अछि से बात नै। हमरा त रहए हम इंजिनियर बनि कऽ घरके सम्हारब। लेकिन आब संभव लगै छौ ?

सरिता चुप्प भऽ जाइत अछि। ओकरा मनमे किछु गुनधुन भऽ रहल छैक, मुदा बेटीसं पुछबाक साहस नहि भऽ रहलैक अछि। लेकिन पुछ त पड़तै। मास्टर साहेब ई जवावदेही दऽ देने छन्हि। तखन कोना पुछी सएह नहि फुराइ छै सरिता के।

'माय, चुप किए भऽ गेले। बाजने किछु। हम तोरा सबस अलग सोचै छी कि ! बाबूजीक अवस्था, दुनू बौआक भविष्य, हमर योजना ई मधेश आन्दोलन गीड़ि लेलक। इएह सोचिकऽ मोन दुखित अछि।'

सरिता कनेक हिम्मत करैए - 'बेटी कह त, तों ठीके एहीला दिन राति कनैत रहैछे।'

किरन आश्चर्यसं पुछैछै - 'तोरा के कहलकौ जे हम कनै छी। हम कनै कहां छी, सोचै छी। मन नै लगैए पढ़मे, किछु करमे।'

'बौआ, ठीके तों हमरा सभक आशा छे। किछु अओर बात छै त बाज खुलिकऽ। हम सभ आन नै छियौ ने।'

किरन निचां मुंह कऽ लैत अछि। ओकरो भितर जेना झंझावात उठल हो। माथ उठबैत छैक आ मायके मुंह दिश ताकि भोकासी पाड़ि कान' लगैछ। माय भरि पांज कऽ छातीसं लगा चुप कर' लगैत छैक।

कानब कनेक थम्हैत छैक त पुछैत छै - 'आब कह तों दुखी किएक छे ?'

किरन सम्हरैत अछि आ मायके कथा सुनबैत छैक - तोरा सभके घर बेचि कऽ अन्त चल जाएबाक बात सुनलियौ त ठीके हमरा रहल नै भेल आ आबि कऽ अपन कोठरीमे भरि पोख कनने रही। चलि जएबाक दुख त रहबे करए एकटा दोसरो बात रहैक।'

माय सचेष्ट होइत छैक - 'दोसर कोन बात ?'

'हम राजिबसं प्रेम कर' लागल छी। आ दुनू गोटे विवाह करबाक विचारो कऽ लेने छी।'

'के छै राजिब गे ? आ एतेक भारी निर्णय विना हमरा सभके कहने कोना कैलही ?'

'माय, ओ दक्षिणवारी टोलक बढ़का घरके बेटा छै। बी.एस.सी. मे पढ़ैत छैक। नीक व्यक्ति अछि। कओलेजेमे मीलि गेलै, की करितिऐ। जहां तक तोरा सबके जानकारी देबके बात त तों सपनोमे नै सोच हम विना पुछने किछु करिती।'

'त, आइ तक बजलिही कैला नै ?'

'कहितियौ, ई मधेश आन्दोलन शुरु भऽ गेलै। लोक सडक पर उतिर गेलै। पहाडी-मधेशीमे भेद छुटिआब' लगलै। हिम्मत नै भेल तोरा सबके किछु कहके। भेलै शांत होतै त कहबौ। ताबेमे जाएके नियार भऽ गेलै त हम की करितिऐ'।

सरिता गुम्म भऽ गेलै। बेटीक व्यथा बुझवामे ओकरा कोने कसरि नै रहलै। लेकिन आब किरन की करत से बात धरि बुझ चाहैत छल। पुछलक - 'आब की करविही ?'

चोट्टे उत्तर देलक किरन - 'की करबै ! हम कहि देलिऐ, आब संभव नै अछि। हम मां-बाबूक संग जा रहल छी। सभ वीसरि जाउ !'

'ओ की कहलकौ ?!

'ओ त कान' लगलै आ ई असंभव थिक बाजल। अहां विना हम एक्को पहर एत्त रहि नहि सकब। बरु जल्दीए आबि जाउ से धरि कहैत रहल।'

'तों की कहलही ?'

'हम मना कऽ देलिऐ। आब घर-परिवारके एहन हालतिमे छोड़ि कऽ हम कतहु नै जा सकैछी। कहि देने छिऐ। आब फोनो अबैछै त नै उठबै छीऐ। ने कओलेजे जाइछी जे कतहु भेंट ने भऽ जाए...। कह

हम की करु ?!

बढ़का बोझ माथपर धऽ देलकै किरन सरिताके। दुनूक बीच एतेक लगक सम्बन्धके तोड़बो कठिन, ने ई निचैनस रहत ने उहे। की करौक ओ-वेचैन भऽ जाइत अछि सरिता।

'माय तों चिन्ता नै कर'। जे तों सभ निर्णय लेने छे, हम साथ छियौ। हं, बाबूजीके हालत एखन बड़ खराब छै। चिन्ता घेरने छैक। ई बात हुनका नै कहिहै।'

सरिता बेटीक मुंह देखैत अछि आ दुनू हाथसं लगमे लाबि चुम्मा लऽ लैत अछि। दुनू माय-बेटी भावुक भऽ जाइत अछि।

सरिता कहैत छैक - 'बेटी, तोरा बाबूजीके सभ पता छौ।'

'से केना गे ?'

जखन तो कोनटा लगसं आबि अपन कोठरीमे कनैत रहे आ राजिवके फोन करैत रहे, तखन ओ आंगनमे आएल छलाह आ तोहर कानब सुनि तोहर दरबज्जा धरि गेल छलाह। तखने तोहर बात सुनल खुन्ह। ताहीसं एहि बातके खुलासा कर'लेल हमरा भार देने छलखिन्ह।'

'माय, बाबुओ जानि गेलखिन्ह नै। हम कोन मुंहें हुनका सोझा निकलबै।'

'सभ ठीक भऽ जएतै। समय घुरतै। बात कैलखिन्ह ह। मन शांत होइते हम तोहर बात कहबनि। ओ जरुर मानि जएताह। खाली ओम्हर मानतै कि नै, ओकर बाप-माय !'

'तकरभार राजिवके छै माय। ओ मनालेत।' - किरन प्रफुल्लित देखि पड़ैत अछि। कएक दिनसं कओलेज नहि गेल रहैछ। ओ तुरत कपड़ा बदलैत अछि। किताब उठबैत अछि आ कओलेज दिश विदा भऽ जाइछ। माय टुकुर-टुकुर बेटीके खुशीसं उठैत पयर पर नजरि टिकौने रहैत अछि।

□□□□

घरमुहां

(उपन्यास)

भाग - दू

१

रमेश उपाध्याय नगरक पुरान वासिन्दा अछि। ओकर पुर्खा कहिया मधेशमे आबिकऽ बैसलै रमेशके पता नै छै। ओ बाबा धरि देखने अछि - एही माटिमे खेलैत, काम करैत, जीवन वितबैत। कहियोकाल संगतमे अथवा स्कूल जाएबेरमे टोपी लगा लेब एक बात, नहि त खाली माथ, पेंट शर्ट, पायजामा-कुर्ता आ बेर-कुबेर धोती-अंगा बस । नगरमे रमेशके लोक मास्टर साहेबक नामसं बेसी बजबैत छलैक। ओ कतेको के पढ़ौने अछि जे एखन नीक नीक पदपर काजकऽ रहलअछि। उमेर पचास नहि टपल हयतैक। एखनो नियमित स्कूल जाइत अछि आ धीआपूताके सेहो अपना संगे स्कूल लऽ जाएल करैत अछि। सरकारी विद्यालयमे अपन छव वर्षक बेटा आ दश वर्षक बेटीके पढा रहल छथि। एकटा सत्रह वर्षक बेटी छन्हि जे आइ.एस.सी.मे पढ़ैत छन्हि। सभ एकस एक तेज । मास्टर साहेब स्वयं सभकें अपने नियमित पढ़ाओल करैत छथि ।

पत्नि सरिता घर-आंगनक काजमे लागल रहैत छैक। वाल बच्चाके देख-रेख, खान-पीन, स्कूलक तैयारी सभ हुनके जिम्मामे छन्हि। मास्टर साहेब जतेक सोंझ, पत्नि ततबे चौचंख, काजमे माहिर। एक ड़ेढ बीघा जमीन गाममे छन्हि, जे बटैया लगा देने छथि, जे हथ उठाई अबैत छैक सन्तोष कर' पड़ैत छन्हि। बाप-दादाके जोडल जमिन-जथा छन्हि,कोहुना डेबरहल छथि। ओहो आब कब्जा क लेतैन सएह खबर आएल छन्हि। कोहुना कर्जो ल फूसके घर ताडि क तीन कोठरीके पक्की घर बना पौलन्हि अछि। घरपरिवार ठीकेठाक चलि जाइत छन्हि। बेगरता परलापर मीत नीक हाथ पुरै छन्हि।

मास्टर साहेबक सभसं प्रिय छथि मीत जगमोहन अधिकारी। अधिकारीसं भ्रममे नहि पडी ओ यादव छथि आ गामक कहबैका सेहो। नीक वेजायमे लोक, समाज पुछारी करैत छन्हि आ समाजसेवी कामेश्वर सिंहक संग हिनको रायके महत्व देल जाइत छैक। वड़ मान-मनौतीसं एकटा बेटी भेलन्हि, जकरा सोलहे वर्षमे विवाह कऽ देलखिन्ह। मैट्रिक पढ़ा कऽ। नाम रखने रहे मनतोरिया। बड़ आश रहैन, से बेटी भेलापर झुझुआन लागल रहै। ओना ओ अपन बेटीकें, बेटो रहितै त तेहन नै मानितै, बड़-सिनेह करै। ओ की करै, मानै त ओकर मीता मास्टर साहेब। धीआपूतामे कोरामे गुंह,मुत धरि करै, पढ़ब' बेरमे कान्हपर लादि स्कूल लऽ जाइ आ विआहमे कन्यादानक पुरा विधि ओ जा धरि नै कैलकै चैन नै लेब देने रहै। बेटीक विदामे की कानल रहए जगमोहन आ रामपुरवाली, बफारि तोड़ि कऽ चिचिआइ मास्टर साहेब आ ओकर पत्नि सरिता। तमाशा लागि गेल रहै दरबज्जा पर। एहन प्रेम छै दुनू परिवारमे।

आइ मास्टर साहेब कैक मासपर निचैनसं घरमे छथि। कहला-सुनलाक असर हेतै, फोन बन्द छै। जीवन सरल भऽगेल छैक। मास्टर खुरसीपर अंगनईमे बैसल अछि आ जगमोहनक बेटी मनतोरिया बारेमे सोचि रहल अछि। मीता ककरो सनेस लऽ कऽ पठौने रहै बेटी लग। विदागरियो मंगने रहै। कहांदन ओकर ससुर अगिला शुकरके दिनो दऽ देने छैक। विआहक बाद एक-दू बेर मात्रै आएल अछि बचिया ! हं, मास्टर साहेब ओकरा दुलारसं बचिया कहैत छथिन्ह। एहि बेर बहुत दिनपर आबि रहल अछि। पता नै मीताक ओइ ठाम की हएत हएतै, ओकरा ओहि ठाम त अपने बेटी अएबाक तैयारी चलि रहल छैक। बचियाक पसिनक अचार बनाओल जा रहल छैक, पेरुकिया, खाजा बनि रहल छैक। मास्टर साहेब नियारने अछि आइए बजार जाकऽ नीमन साडी कीनि कऽ लाओत बचिया लेल।

बचिया मोन पड़िते मास्टर साहेबके अपन बेटी किरणक स्मरण भेलै। चारि त बजिते हएतै, दुइए बजे धरि क्लाश छलै,कत्त अछि कि भेलै। आएल रहैत त ओकरे लऽ कऽ बाजार जइएहुं - 'एहने सन

सोचमे पड़ल मास्टर साहेबके ध्यान भंग कएलक हुनक मोबाइलक आबाज-सागपात तोड़ि तोड़ि दिवस गामएबै हे हम मिथिलेमे रहबै ।' एह खूब मज्जाक छै ई रींगटोन- मीत भरबा देने रहै । दुनू मीत जखन मस्तीमे रहैत अछि तं इएह गीत गाओल करैत अछि । एखनो जखन ई गीत बजलै त ठोढ़पर मुस्की दौगि गेलई मास्टर साहेबके । जेबीसं मोबाइल नीकालि कानसं सटौलनि -'हेलौ !' ओम्हरसंकी पुछलकै पता नै हुनक अनुहार स्याह भऽ गेलनि । हाथ थरथर काप लगलनि आ धम्मसं कुर्सिपर बैसि रहलाह । हुनका किछु नै फुरा रहल छलन्हि - सभकिछु शांत भेलाक बादो ई की ?

पत्नि आंगनसं बहराइत छलीह भ्मोड़ा लेने । सम्भवतः किछु लाब जाइत छलीह दोकानपर । पतिके एहि तरहें घामे पसिने नहायल आ अर्धचेतन अवस्थामे देखलक त दौड़लीह । चिचिआए लगलीह - गे किरिनमा, बौआ अनूप, जानकी कत्त छें, दौड़...। लगमे जा पतिसं पुछलकै - की भेल अछि, एना किए कएलहु ?

बेटी जानकी कतौ खेलैत खलीह । दौगिकऽ आगु अएलीह । माय आदेश देलकै - जो आंगनसं लोटामे पानि लऽकऽ आ । जानकी दौगल आंगन दिश । हेटौंडा बाली फेर पुछलकै - कहु ने,की भेल ?

'की हएत, रक्षसबासभ किरणके उठाकऽ लऽ गेल ।' - आ भोकासी पाड़ि कऽ कान लगलाह । मायो चिचियाए लगलीह । कनेक थम्हलि त उलहन दैत बजलीह - हम कहने रही ने, चलु एहि ठामसं । आब हमरा सभके अईठाम रहबाक कोनो अर्थ नै । ई बेर-बेर पाई मांगब, मारबाक, अपहरणक धमकी । आइ त बेटियो के उठा कऽ लऽ गेल ने ! नाक-मुंह कारी भेल ने ।

मास्टर साहेबक होस गुम्म भऽ गेल छन्हि । पत्निके की जवाव दीतथि । 'ओ त अपन पुर्खाक डीहपर रह' चाहै छलाह । एहि धरतीके छातीसं लगौने छलाह । मुदा २०६३ सालक मधेश आन्दोलनके बहाना बना किछु गुट सभ पहाडी-मधेशी कऽ देलक । मूल मुद्दा तरमे भ्मंपा गेल । आइ ने काल्हि ई त हयबाके छलैक - मास्टर साहेबके ज्ञात छलै । मुदा दश लाख टकाक मांग ओ पुरा नै कऽ सकैत छलाह । ई

हुनक सामर्थसं बाहरक विषय छलै । बेटीक अपहरण करबाक धमकी के ओ सहजरुपे लेने छलाह - एतेक निचतापर त नहिए गिरतै । फेर ई कोना भऽ गेल ।

पत्नि फेर टोकलकन्हि - आब की हएत ?

मास्टर साहेब थाकल स्वरमे बजलाह - हमर हाथमे किछु ने अछि । की करु किछु ने फुराइए !

'प्रहरीमे खबर कऽ दिऔ, उइह किछु करतै'

नै,नै, एहन गलती नै । ओ सभ प्रहरीमे खबर करब त बेटीक मरल मुंह देखब कहने छल । ओ सभ भ्मूठो नै बजैत अछि - एहन गलतफहमीमे कए गोटेक जान गेलैए ।

तकी एहिना बैसल रहने हमर बेटी, सुगिया बेटी धूराओल जा सकैए । किछु ने किछु त करही पड़त - मायकचिन्ता बढ़ले जा रहल छैक ।

'पता नहि हमर बेटी कोन हालतिमे होत । कत्त रखने अछि चंडलबा सभ' - मास्टर साहेब गुनधुन करैतबजैत अछि ।

□□□□

२

राजमार्गसं लगभग दश कि.मि. उत्तर चुरे पर्वतमालाक फेंदमे एकता खण्डहर जकां छैक। कोनो प्राचीन मंदिरक छांट छैक। देवाल सभ ढहल, छतक नामो निशान नहि। मुदा बढ़का-बढ़का ईंटसं बनल एकटा कोठरीक चारुकातक देवाल ठाढ़ छैक। उपरसं जंगली झाड़पात एना कऽ लतरल छैक जे बाहरस भितर देखव कठिन छैक।

ओइ खण्डहर बनल कोठरीमे हाथ आ मुंह बन्हने किरनके राखल गेल छैक। दूटा गुण्डासन छौड़ा हाथमे देशी पेस्तौल लेने पहरा दऽ रहल छैक। किरनक आगां कागजमे प्लेटमे पुरी आ तरकारी राखल छैक। पीबाक लेल पानिक बोतल सेहो राखल छैक। दुनू बेराबेरी किरनसं खएबाक लेल आग्रह करैत रहैछ। ओ सभबेर नकारि दैत छैक। दुनू जेना ओकरासं तंग आबि गेल छै। एक बजैतअछि - पता नहि, बौसके एहने लोक उठबैत आनन्द किए लगैत छैक। ने पाइ, ने सहयोग, लाख झंझट।

एक बेर फेर आग्रह करैछ - खाउ ने। भोरस्रं एक चुरुक पानि आ एक्कोटा दाना मुंहमे नहि गेल अछि। कोना जिबै ?

'ओहुना अहांसभ हमरा मारबे करब। हमर पिता ने दशलाख टका देताह ने अहां हमरा छोड़ब। तखन ई मरकौर खाइए कऽ की करबै ?

आ जं अहां नै खाएब आ किछु भ गेल त हमसभ मारल जाएब। तै स गोर लगैछी, दुइयो कौर मुहमे ध लिअ।

किरण दुनूक अनुनय विनय सुनैत अछि आ मनेमन ओकरा सभपर दयो आब लगैछै। दयाक कारणो छैक। जहियास एकरासभक फन्दमे ओ पडलि अछि ई दुनू ओकर नीक खियाल रखैत आबि रहल

छैक। एहिना बाजि क खाना खएबापर मजबूर क चुकल अछि ओ। मुदा आइ एकरा सभक कोनो बात ओ नै मानत-किरन दृढ अछि।

तखने दुनू महक एक गोटेक मोबाइल बजै छै। के अछि ? बास छै रौ, की कहै है, देखही' - एकगोटे उत्सुकतासं बजैत अछि। मोबाइलवाला- जी, होतै, ठीक है मात्र अदबसं बजैत मोबाइल राखि दैत छैक। की कहलकौ ?- दोसर छौंड़ा प्रश्न करैत छैक। पहिनुका गंभीर होइत कहैत अछि -'कहलकैअ जे सात दिनके समय देने छैक। जं दश लाख लऽ कऽ नहि आओत त एहि छौंड़ीके सिन्धुलीके जंगलमे लऽ जाकऽ उड़ा देब ला।'

ई बात सूनि कऽ किरनक होश गुम्म भऽ गेलै। माने आब ओ जिवित नै रहि पाओत। सभ सपना चकनार भऽ गेलै। भेल रहै इंजिनियर बनि कऽ वापके किछु राहत पहुंचाओत। आब त निश्चित छैक, ने बाबूजी पाइ देथिन्ह ने हमर जान बचत। किरन ओत्तहि निढ़ाल भऽ गेलीह।

तखने खरखराहटके आवाज अबैछै। दुनू सतर्क भऽ जाइछ। एकटा मोबाइल लगबैत अछि। ओम्हरसं खबर अबैछै। अपन साथीके ओ दहशति भरल आंखि सं निहारैत कहैत छैक - भाइ, आब त प्राण नै बचतौ। पुलिस आबि रहल छैक। लगैए सार मस्टरबा पुलिसके कहि देलकै। लेकिन पुलिस एत्त केना आबि गेल। ई त अत्यन्त सुरक्षित ठाँव छलै। तैयार रह। दुनू पोजीशनमे आबि जाइतअछि। एकटा किरन दिश गुम्हरैत कहैत छैक- ठीक छै, हम सभ ओहिना नै मरबै, तोरा संगे मारने जैबौ। कनी देख त लिऐ, पुलिस की करैए !'

आठ-नौ गोटे प्रहरीक झुण्ड लग आबि जाइछ। चारुकात खिरल छैक। अगलबगल खोजि रहल छैक। किरनके राख बला ठाँव ठीके सुरक्षित रहै छै। कोनमे झाड़-पातसं झांपल, जेना वर्षहुसं ओम्हर केओ नै गेल हो।

एकटा असई, लगैए ओकरे कमाण्डमे प्रहरी सभ आएल छल, ठीक ओही कोन लग आबि ठाढ़ भऽ जाइछ। दुनू छौंडा अपन-अपन

घोड़ापर आंगुर कड़ा कऽ दैछ। मुठभेड़क संभावना बढ़ि रहल छैक।

दोसर दिश खिरल प्रहरी सभ ओत्तहि जम्मा होइत अछि। असई पुछैछै -'के भो ? की भेलौ !' ओ सभ माथ डोलबैत उत्तर दैछ - कतै देखिएन। कतौ नै देखलिऐ। असई एक्के बेर उत्तेजित भऽ जाइछ - साला, मोराहरु गलत सूचना दिन्छन् र हामीलाई ज्यान जोखिममा पारेर यस्तो बीहड़मा आउनुपर्दछ। खै त, केहि छैन ! ल, हिँड ! (सार सभ गलत सूचना दैत अछि आ हमरा सभके जान जोखिममें पाड़ि एहन बीहड़मे आब पड़ैत अछि। कहां कतौ किछु छै ! चल।) प्रहरी सभक पदचाप क्रमशः क्षीण होइत जाइत छैक, एम्हर दुनू छौंडाक जानमे जान पलटैत चल अबैत छैक। करिकबा छौड़ा गुम्हरि कऽ किरण दिश तकैत छैक - खैर अखनु त वांचि गेलें, लेकिन बौससं नै बचबे। पुलिसमे खबर !

किरन चुपचाप पड़ल रहैत अछि।

□□□□

३

मास्टर रमेश उपाध्याय खुरसीपर बैसल गंथन-मंथन कऽ रहल अछि। लागल रहै सभ ठीक भऽ गेल छैक। सहमतियो भेलै चुनावो भेलै। राजकाजमे सभ लागि गेल अछि। जीवन सहज भऽ गेल रहै मास्टर साहेबके। आ आब विचारो भेल रहै जे दुनू परिवारमे वात चला देल जाए। जाहियासं मायसं बात फरिछा गेलै, किरन दिन राति फुदकैत रहैए। घरमे सभ गतवर्षक पीड़ा बीसरि चुकल छल। मुदा ई फेर ककर उसकैलापर गड़ल मुर्दा उखारल गेलछैक। आ आब त हदे कऽदेलकै - एह हमर फूलके, प्राणके उठा लेने अछि। धन आ इज्जत दुनू गेल। ताहूमे पाइ देबैक त बेटी बांके जंगलमे भेटतै। नहि तं सिन्धुलीके जंगलमे लऽ जा कऽ गरदनि छपकि देतै। मास्टर साहेब मनेमन हाक्रोश कऽ उठैतछथि - रे चंडलबा, छपकबे त हमरे गरदनि छपिकिले, ओइ निर्दोष बच्चीके कोन दोष छै !

मीतोके खोजबीन भेल अछि। ओ भारत दिश गेल छथि एक सप्ताहकलेल। पता नहि हुनका एहि बातके पत्तो छन्हि कि नै। ओ रहितथि त किछु निकास त दुनू मीत मीलिकऽ निकालितहुं। एहने सन उधेड़ बूनमे पड़ल मास्टर साहेबक ध्यान तोड़लकनि ओहिवाटे जाइत पं. चन्द्रशेखर मिश्र। मिश्र -'की औ, मास्टर साहेब ! कथीक गुनधुनमे पड़ल छी ?'

मास्टर साहेब सहज होइत प्रणाम करैत छथि आ आग्रहपूर्वह दोसर खुरसीपर बैसबाक अनुरोध करैत छथि।

'नहि कोनो, अपने दीनदुनियांक बात मोन पड़ैत अछि।'

'हं, कोनो जोगाड़ लगलै कि ? बड़ अन्हेर भऽ गेलैए ई। कहु त

ई केहन आन्दोलन छै जैमे बेटी पुतहुकें अपहरण कऽ लेल जाइ आ औकातसं फाजिल पाइ मांगल जाइक' - पं.जी कनेक विस्तारसं सहानुभूतिक हेतु शब्द गढ़ैत छथि ।

'पं.जी, अही कहु, एकटा स्कूल मास्टरक लेल लाख टका बढ़का बात छै, ई त दश लाखक बात छै ।'

'सवाल बेटीक अछि ने ! अपन सक त अछि नहि । किएक ने पुलिसके कहल जाए । ओहो त अपराधी पत्ता लगौतै ?'

'मिश्रजी, आइ धरि कएटा अपराधी पकड़ाएल अछि ? उनटे सुनैछी कमिशने खाइछै ई चण्डलबा सभ । तहुमे हमरा कहने अछि अपहरणकारी सभ जे पुलिसके नै कहबा लेल । हम की करु ! केना कहियौ पुलिस के ?

नै, नै ठीके कहलहुं, एहन गलती नै । इज्जत आ धर्म दुनू संकटमे पड़ि जाएत । ई जे अपहरण, लुटपाट होइछै से की विना ओकरा सभके जनतबे के ? औजी मधेशमे तीरसठि सालक आन्दोलन त जहां मधेशीके प्रतिष्ठापित कएलक, ओकर प्रतिष्ठा बढ़ौलक ओत्तहि किछु लोक एकरा नामपर उठि बैसल । केओ मधेश मुक्तिक नामपर त केओ मौजमस्तीक नामपर । पुलिस साफ नै अछि, नाहकमे बेटीक जान खतरामे पाड़बै । अहां ठीक सोचलहुं । अपने किछु सोचु ।' पं. जीक बात मास्टरके चितमे लगैत छैक । ओ गुम्म भऽ जाइत अछि ।

तावत एकटा यजमान पं. मिश्रके बजब चल अबैत छैक । ओ उठि कऽ फेरस विचार करबाक बात कहि घर दिश विदा भऽ जाइछ ।

एम्हर मास्टर साहेबक कनियां ससरि कऽ लगमे अबैत छन्हि । एक्के दिनमे चेहरा बदरंग भऽ गेल छन्हि । घरवाली दिश ताकि दहो वहो नोर बहब' लगैत छथि । घरबाली सेहो कान' लगैछ । माय-वापके कनैत देखि दुनू भाइ वहिन सेहो कान लगैछ । बड़ कारुणिक माहौल भऽ जाइछ ।

मास्टर साहेबक मोबाइलक घंटी बजैत छैक । सभक कननाई त रुकि जाइछ मुदा चेहरापर हवाई उड़ लगैछ । डरे घामेपसीने नहा जाइछ - पक्के ओही चण्डलबा सभके फोन हएत । कानसं लगा हेलो कहैत अछि - 'नै हजूर ! हम ककरो नै कहने छिऐ । प्रहरीके कहने होइ त गाइके मासु खाई । हमर बेटाके सप्पत । पता लगा लू हमरा जे सजाए देब, सहब हजूर । हमर बेटीके कुछोनै होए ।!

लगैछै ओम्हरसं खण्डहरमे प्रहरी गेलापर डटै छलै अपहरणकारी । मास्टर थर-थराइत सप्पत प सप्पत खा रहल छल । जखन फोन बन्न भेलै त कुर्सी परसं उठि अखड़े चौकीपर चितङ्गे पड़ि रहल । लगैक जेना कतेक पैधबोझ माथपर पड़ि गेल हो । पत्नि चिन्तित, हतोत्साहित पति लग अबैत छैक । पुछैछै - की भेलै ? कैला एना भऽ गेल छल ?

'केओ गोटे प्रहरीमे खबर कऽ देने छलै कहांदन । ताहीपर विगड़ैत छल । के अछि हमर दुश्मन जे एना कएलक । बीपत्ति अबैछै त एहिना छाया सेहो साथ छोड़ि दैत छैक - मास्टर साहेब निढ़ाल भेल जोर-जोरसं सास लैत बरबराइत छथि ।

पत्नि टौकैत छन्हि - आब की करबै । सात दिनमे पाइ कत्तसं लएबै ?

की करबै । ताबत दम धरबै । कोनो जोगाड लागि जाय से लगैए नै । मीतके कोना कहियौ । हजार-पांचसयके बात नै छै। दश-दश लाख । की कोठी, चक्कापर रहैत छैक जे हाय धरु आ नीकालि लू । ओहुना हुनकर हमरा सभपर बड़ उपकार छैक -मास्टर साहेब हारल स्वरमे बजैत छथि ।

'त ई घर बेचि दिऔ । आ पाइ चुकाकऽ हमसभ दोसर ठाम चलि जाएब । कमा खटा कऽ गुजर करब । बेटीके जान त बांचत - सरितामे मायक ममता जोड़ मारैत छैक । लगैछ आब दोसर आशो नै अछि । लेकिन कहले समयपर लेबो के करत- मास्टर साहेब पत्निक हं मे हं मिलबैत बजैत छथि ।

'आब त उगलहे सुरुजपर भरोसा कर' पड़तै -पत्नि निराश स्वरें हाथ उठबैत आंगन दिश विदा भऽ जाइछ । मास्टर साहेब टुकुर-टुकुर आकाशके निहारैत रहैत छथि ।

□□□□

४

आइ फेर कएदिनसं किरन कओजमे देखि नहि रहल छैक राजिवके। जहिया नै देखैछ मोन छटपटा उठैत छैक। शुरुमे जहिया नहि भेटवाक बात कहने छलीह त ओकर होश गुम्म भऽ गेल रहै। कएदिन धरि ओहो कओलेज नै आएल छल। एहम्हर जहियासं ओ आब लागलि छलीह ओ नियमित अबैत रहल अछि। दुनू गोटे पूर्वक निर्णयपर अटल रहबाक बेर-बेर सप्पत खाएल करैक। अपन-अपन माय-बापके मनएबाक जिम्मेवारीयो लऽ लेने रहए।

मुदा फेर कएदिनसं ओ लापता अछि। फोन करैछै त फोन नै जाइछै। स्वीच अफ बतबैत छैक। फेर किछु भेलै कि ? ओकर आंगन जाउ त कोना। दू माइल चलिकऽककरो घरमे जुआन बेटीके खोज जएबाक किछु अर्थ होइछ। परिवार वा समाज की बुझतै। की करओ-राजिवके किछु अनहोनीक संकेत बुझएलै।

तखने विनोद आन तीन गोट संगीक संग ओत्त अबैत अछि। खाली बेंचपर एसगर उदास राजिबके देखलकै त फट्द बाजि देलक-लगैछौ ओहि पहडनियांक वियोगमे पडल छें।

राजिब गुम्हरि कऽ विनोद दिश तकैत अछि आ कड़कि कऽ बजैत अछि - विनोद, तोरा बाज' के लुरि नहि छौक। की पहडनियां - पहड़नियां लगौने रहैत छे। की ओ सभ मनुकख नहि छै ?'की ओकर नाम नहि छै ?'

माफ कर भाई ! हम वास्तवमे मजाकमे कहि देलियौ ! तों त जनैत छें किरनके हम भौजी कहैत छिऐ आ मजाकमे पहड़नियां सेहो। एक्कोरत्ती दुख नै मानैत अछि। वरु मुस्कुरा कऽ चुप भऽ जाइत अछि।'

'ई तोरा दुनूक बात भऽ सकैछौ। हमर बात भिन्न अछि। तों जनै छही हमरा लेल किरनक की महत्व छैक। एकदिन नहि देखैत छी अथवा एकबोल नै सुनैछी त मन विचलित भऽ जाइत अछि। से आई कएक दिनसं ओ देखाइ नहि पड़ैत अछि। आ ने मोबाइले उठबैत अछि। ताहूसं मन चिन्तित अछि।'

सभ गोटे गंभीर भऽ जाइत अछि। वास्तवमे चिन्ताक विषय त छलैहे। ने कओलेजमे अएनाई आने फोने कएनाई वा उठएनाई। सभक अनुहार पर चिन्ता देखार भऽ जाइत छैक।

पांचो महक एकटा छोटे कदके विद्यार्थी विनोदके कहैत छैक - 'उत्तरवारी टोलक एकटा लड़की अपहरणमे पड़ल छैक। नेपालीके एकटा मास्टर है। उ त पं. चन्द्रशेखर मिश्र हमरा ओत्त आएल छलाह, सत्यनारायणक पूजाक तीथि देख त बजैत छलाह त हम सुनलिऐ। हमरा लागल ई त आइ काल्हिके खेल भऽ गेल छै' के ध्यान देओ।'

चौंकि उठल राजिब। ओइ साथीके कनेक नीक कमां बात फरिछएबा लेल कहलकै। साथी बात फेरसं पूर्वके दोहरा देलकै। राजिबके लगलैक शायद किरने भऽ सकैत अछि - नेपाली पढ़ब' बला मास्टर आ ओकर बेटी। ओना ओइ टोलपर दोसरो नेपाली पढब बला छै। मुदा किरनक किछु दिनसं कओलेजमे नै अएनाई, फोन सम्पर्क नै भेनाई कतौ ने कतौ सत्य जकां लगैत छैक।

राजिब एहि सत्यके जानके लेल कछमछा उठैत अछि। ओ विनोदके संग लऽ मोटरसाएकलसं उत्तरबारी टोलदिश चलि पड़ैत अछि।

□□□□

५

उत्तरबारी टोलमे पैसबाकाल दक्षिणे दिशसं एकटा चौक छै। ओत्त रामलखन कामत एकटा चाहक दोकान खोलने अछि। ओइ परोपट्टाके बुझल लोक भोर-सांझ ओकरा ओत्त चाह पीबाक लेल करमान लागल रहैत छैक। सयसं उपर गिलासकछल्ली, दू गोट नोकर आ दर्जनसं उपर लोक लगभग दिन भरि। मात्र खाना खाए बेरमे एक-दू घंटा छोड़ि।

बात रामलखनके चाह दोकानपर सेहो चल लागल छैक। लोक डरे गर जांतिएके बजैत अछि। पता नै काल्हि ओकरोपर चढ़ाई कऽ दैक। जकर कोनो इमान आ प्रतिष्ठानै होइछ ओ किछु कऽ सकैत अछि। सुखीमड़र हल्लुक स्वरे लछुमन बेलदारके कहैत छैक - अन्हेरभऽ गेलै। मास्टर साहेबके पढुआ बेटीके स्कूलसंनीकलिते कहांदुन गड़ीमे धऽकऽ किछु लोक उठालेलकै आ आब दश कि बीस लाख मंगै छै। हौ, कत्तसं देतै मास्टर !'

लछुमन बजैत अछि -'हं, हौ हमहुं सुनलिऐ अ।' आ चारुकात चकुआकऽ धीरेसं कानमे कहैत छैक -'कहांदन ओइ गाड़ीमे लुखिया लठैत रहै हौ।'

'हौ मरदे, उ त कामेश्वर बाबूके दहिना हाथ है। केना रहतै हो।' 'एह, इहो बातके सभ तरि गुपचुप चर्चा होब लागल है।'

'हे, भऽ गेलै। चल ई बात सभ एना चौक चौराहापर बाजबला नै है। हम सभ गरीब आदमी छी। कैला झमेलामे पड़ब ! - सुखी मड़र हाथक खैनीक जूमके चुटकीमे लछुमनके दैत उठि जाइत अछि।

मुदा ओकर बात ठीक पाछामे बैसल चाहकचुस्की लैत राजिब आ

विनोद सेहो सुनैत अछि। ओकरा दुनूके जाइते राजिब, कामतके चाहक पाइ दैत छैक आ मोटरसाइकल पर विनोदके बैठबाक ईशारा करैत अपना टोलदिश बढ़ि जाइत अछि।

बाटमे विनोदके छोड़ैत घर पहुंचिते राजिब मायके सोर करैत अछि -'माय, गे माय, जल्दी एम्हर आ त !'

राजिवक माय आंगनसं बाहर अबैत अछि आ बेटा दिश उत्सुकतास देखैत पुछैत छैक - की भेलै बौआ ! एना किए वेकल छे ?'

'बेकल, हएबाक वाते छै माय। कह पहिने बावू कत्त छौ ?'

'तोरा बुझले हौ। उ अपना मनके मनमौजी छथि। हएता कतौ समाजसेवा करैत।'

'मोबाइलसं फोन लगा त !'

'कएने छलिऐ, नै जा रहल है। कहै छै स्वीच अफ है। एकटा ठेकान रहे तखनने ककरो खोजहुं पठौतिऐ। मनराके घरमे वीआह छै, पाइला मोरेसं तंगरने है। ताहीला हम फोन कएने छलिऐ।

मायक उत्तर सूनि राजिब गुनधुनमे पड़ि जाइत अछि। ओकर कछमछी देखि माय पुछैत छैक - बौआ, कोनो खास बात है कि ! वापके जरुरी हौ ?'

बात त खासे है माय। उत्तरवारी टोलके मास्टर साहेबके तों जनिते छीही - रमेश माटसैब।'

'हं, हुनका के नै जनैत छन्हि। बड़ नीक लोक छथि। तोरो त उएह पढ़ौने छथुन्ह।'

'आ इहो जनैत होइबही उत्तरबारी टोलपर एकटा लड़कीके अपहरण भऽ गेल छै ?'

हल्ला त है।

हल्ला मात्र नै सांच बात छै माय।

' वाप रे अन्हेर भऽ गेलै। लोक कहै मधेश आन्दोलनमे अपहरण, लुट आ चन्दा आतंक रहै। आब त सभ शांत भऽ गेलै। चुनावो भऽ गेलै। फेर ई कोन व्यक्ति सभ छै जे एना कऽ रहल है, जानि नै।'

'ई के कऽ रहल है से त बुझल नै है ककरो मुदा इहो बूझिले जे अपहरणमे पडलि ओ लड़की और केओ नै किरन छै ?'

'अएं रे किरन बौआ छै रे ! माने रमेश मास्टर साहेबके बेटी। हम त दोसर कोनो मास्टर बुझने रहिहै। तों त ओकरा बारेमे कहने रहे आ हम त भेंटो कराबकेलेल कहने रहियौ। बौआ, ई त अनर्थ भऽ गेलै। तोहर बाबूके कहि कऽ चण्डलबा सभके हथकडी लगब' पड़तै !

राजिवके माय आगांक चौरमे राखल खुरसीपर बैसि जाइत अछि। चेहरा क्लांत भऽ जाइत छैक। जेना मोनमे रहल कोनो सपना छहोछित भऽ गेल होइक।

'हथकड़ी ककरा-ककरा लगैबही। ई हथकड़ी तोरो घरतक आबि सकैछौ।'

ई की बजैछे राजिव। के अछि एत्त एहन ?'

'बाबूजी ! हं, हुनके शागीर्द सभ ई अपराध कएलक अछि आ हमर दुनियां उजारि कऽ राखि देलक। हम एक्को आदमीके जीब नै देबै, चाहे हमरा जे होइक' - राजिव आवेगसं दुरुखीसं आंगनमे पैस चाहैत अछि। ओकर अभिष्टबूझि माय हाथ पकड़ि दोसर खुरसीपर बैसा लैत छैक।

'ई केहन बात तों बाजि देलही बौआ ! तोहर वापक साथी सभ एहन त नै है। एकसं एक बढ़का आदमीसं संगत है तोरा वापके। चौगम्मामे लोक इज्जत करै है। मधेश आन्दोलनमे राशन, पानी उहे पहुंचबैत छलै, अपनो लागल रहै। ई तों की कहि देलही ?'

'माय तो भोली छें। जीवनभरि जाहि व्यक्तिक संग रहले तकरा चीन्हि नहि सकलही। ओकर एक्केरुप तोरा अगां अएलहु। एकटा जवावदेह पतिक, घरवाला आ पति परमेश्वरक रुप। दोसर समाजक आगां अएलैक समाजसेवी, आन्दोलनी आ परोपकारी। मुदा तेसर रुप

सेहो भऽ सकैछ - हत्या, अपहरण आ फिरौती कऽकऽ धन जम्मा कर' बला पिशाचक। ई ने तों देखि सकलही, ने तोहर बाल बच्चा देखलकौ आ ने समाज देखलकै। तएँ ओ रुप नुकायल रहलै। आ तों, समाज ओकरा इज्जत दैत रहलै, प्रतिष्ठा दैत रहलै !'

राजिवके भाषणसं मर्माहत ओकर माय कनेक जोरेसं राजिव पर पिता उठैत छैक -'वस, आब एक्को शब्द नहि। तोरा पर ओइ छौडीके भूत सवार छौ। ओकरा आंगा तो अपन जन्मदाता धरिकें उकटि देलही। आइ ओ सुनतौ त की होतै घरमे बुझल हौ ?'

'की होतै, हमरा घरसं नीकालि देतै। हमरा आने जकां पेस्तोल निकालि शूटकऽ देतै, आर की करतै ?'

राजिवक मायके उड़ीवीड़ी लागि जाइत छैक। कछमछी बढ़ल जा रहल छैक। राजिव एक्के बेर एतेक आक्रामक भऽ जएतै ओकरा विश्वासे ने छलै। किए भऽ गेल ओ एना !

पुछैत छै - तों एतेक भारी आरोप कोना लगैलही ? अनकर सुनल प ने !'

'हं, सुनल त अनके अछि। मुदा किरनक अपहरणमे लुखिया लठैतके गामबला साफ देखलकै। खाली वावूके डरे पुलिसके किछु नै कहै छै। तोंहु जनै छीही, लुखिया बावूजीके दहिना हाथ है। बेर-सबेर ओकरा लेल हबेली खुजल रहै छै।'

'हं ई त सांच बात छै लुखिया हुनकर बेसी प्रिय पात्र छन्हि। मुदा ओ एहन नीच काज करत। ई कोना भऽ सकैछै ?'

'इएह भेलैए मां, इएह भेलैए। तोरा लगैछौ जे हम तोरासं झूठ कहबौ ? चल बाबूजीके लग। हुनकेसं पुछै छी, वात की छै, तखन तोरा विश्वास हौ तौ ने।!'

'नै, एखन तों शांत भऽ जो। किरनके अपहरणके हमरो बड़ दुख भेल अछि। जकरा अपना घरमे पुतहु बना कऽ लाब' के मन बना लेने छली, तकरासंग ई दुर्व्यवहारसं हमरा ठेस पहुंचल अछि आ तोरो पहुंचल छौ से ठीके। मुदा कनेक नरम भऽ कऽ सोचही। बौआ, एहि

आरोपमे कतेक दम भऽ सकैछै ?' यदि गलत भेलै त बढका अनर्थ भ जएतै ।'

'माय, एखनो तक तोहर स्वामीभक्ति सांचके स्वीकार नहि कर' चाहैत छौ । तैस त कहै छियौ चल । बाबूजी अवश्य गेस्ट हाउस बला घरमे हएताह ।'

'नै, आइ धरि घरके कोनो महिला ओत्त गेलैए से हम जाउ । ओत्त हुनक पाहुन सभ अबैत रहैत छथि, ई ठीक बात नै होएतै ।'

'एखन नीक आ बेजाय विचारके समय नहि छैक माय । पानि माथसं उपर बहि रहल छैक । जा धरि बातके तह धरि नहि पहुंचल जएतै, किछुओ भऽ सकैछ । आब मात्र किरनक बात नै छै, हमरो जीवनक बात अछि । तोरा केहन लगतौ जे हम सभके छोड़ि, किरनके खोजमे बौआइत कतौ चलि जाइ ।'

'नै, चल हम चलै छियौ । जखन घरे उजड़ि रहल अछि तखन इज्ज्त आ मान मर्यादाक कोन गप । सत्य धरि पहुंचब जरुरी छैक । हम अपने तोरा वापसं पुछबै, आखिर की छै एहि घटनाक पाछ्नांक रहस्य ।'

राजिव कनेक आश्वस्त होइत अछि । मायके मोटर साइकलक पाछां बैसबैत छैक आ पुरना घराडीदिश विदा भऽ जाइछ ।'

□□□□

६

पहिलुका घरवारी रहल पुरना घड़ारीपर चारि कोठलीक सुन्दर मकान बनौने छथि कामेश्वर सिंह । लोकसभसं एत्तहि भेंटघांट होइक छैक । नइ-मेहमान अएलापर एत्तहि टिकबैत छथि । एकरा बोलीचालीमे 'गेस्टहाउस' कहल जाए लागल छैक ।

अइ घराडीपरक 'गेस्टहाउस'मे किछु एहनो लोकक आगमन होइत रहैत छैक जे गामक लेल अनचिन्हार भेल करैत अछि । चेहरा-मोहरा किछु भय प्रदान कर बला । एहन लोकसं चुपचाप भितरका कोठरीमे मिलल करैत अछि कामेश्वर सिंह, जत्त जएबाक अनुमति घरक लोको धरिके नहि छैक । वाहर दरवान रहैत छैक जे ओइ घरके सुरक्षाक लेल राखल सन बुझाइत छैक, मुदा ओ आबजाए बलाक हैसियत देखि मालिकके खबरि कऽ भेटबैत छैक ।

एखने एकटा जीप ओइ मकानक पछुंआरमे आबि कऽ रुकैत छैक । जीपमेस लुखिया आ तीन गोटे आर उतरैत अछि । ओकरा देखिते दरवान भितर पैसैत अछि आ चोट्टे बहरा कऽ लुखियाके भितर जएबाक संकेत करैत अछि ।

भितरमे एकटा पैंध कलात्मक खुरसी पर कामेश्वर सिंह बैसल अछि । आगांक टेबुलपर किछु फाइल सभ राखल छैक । दूटा मोबाइल सेट सेहो घएल छैक । वगलमे एकटा स्टीलक अनवारी छैक । जे बन्द अछि आ कोनमे एकटा गोदरेजक सेफ छैक । निचांमे कारपेट विछाओल, जाहिपर टेबुलके आगा नीक आ मोट जाजिम पसरल अछि । खुरसीके दूनूकाल सोफा सेट छैक, जे प्रायः विशिष्ट मुलाकातीक हेतु उपयोगमे लाओल जाइत हएतैक ।

लुखिया तीनूके संगलेने कोठरीमे प्रवेश करैत खछि। कामेश्वरके सलाम करैत छैक, तकरासंगे ओ तीनू सेहो झूकि कऽ सलाम करैछ। कोमेश्वर तीनूके कनेक गौरसं देखैत छैक आ लुखियाके पुछैत छैक - 'काम भऽ गेलै ?'

'जी मालिक, पांच पेटी मात्रे देलकै। कतबो धमकएलकै, मारलकै तैयो नै आगां बढ़लै' - लुखिया हाथमहक छोटका बेग कामेश्वरक आगाक सेन्टर टेबुलपर धऽदैत अछि।

'हुं-कामेश्वर हुंकारी भरैत बेग खोलैत अछि आ ओहिमेसं तीनटा गड्डी नीकालि कऽ तीनू दिश फेकैत कहैत अछि -ले, तोहुं सभ मौज कर।'

फेर लुखियादिश ताकि पुछैत छैक -'उत्तरवारी टोलक की हाल छै ?'

'मालिक, उ त देबसं नासकार कऽ रहल छैक। गरिब मास्टरके संगमे दशलाख कत्तस अएतै से कहि रहल छै ?'

'कहिया तक समय देने छही तों सब ?'

'एह, आइ अन्तिम दिन छै। सुनलिऐअ कहांदन घर बेचि रहल है। भऽ सकैए बेटीक कारणें पाइ दऽ दै।'

'से खिआल रखिहे। कहने छियौ, तहिना करिहे। बांकेक जंगलमे लऽ जो। मास्टरके ओतै सांझमे बजा कऽ पाई लिहे आ बेटी दीहे। हं, एकटा बात ध्यान रहे। पाइ नै देतौ त ओकर बेटीके ओत्तस लऽ जा कऽ जंगलमे उड़ा दिहे, बस।'

'जी, एहिना होतै। त हम अखनु जाइ छी। वंठा सभ बैसल होतै।'

'ठीक छै जो। कनी साबधानीसं, ककरो भनक नहि लगै। एहन कामसभ जोखिम बला होइछै। पुलिसो सुंघैत रहैत छैक। आ हे, ओम्हर दरबज्जा दिश एखनु नै जइहे। राजिव आ ओकर माय एखनु देखतौ त शंका करतौ। गांवमे हल्ला पसरल छै कहांदन।' - लुखियाके

चेतबैत कामेश्वर वेग लऽ कऽ उठैत अछि आ सेफके खोलिकऽपाइ नीकालि तहिया कऽ धर' लगैतअछि।

लुखियाके निकलिते ओही दरबज्जा दऽकऽ राजिव आ ओकर माय बटेसरबाली प्रवेश करैत छैक। वाहरमे ठाढ़ दरबान मलकिनी आ छोटका मालिकके देखि भौचक्क रहि गेल रहय। ने रोकैत बनलै ने भितर कहैत बनलै। लुखिया सेहो भितर पैसैत देखि लेने रहय। ओ तीनूक संग गाडीमे बैसल आ लंक लागि गेल।

पाइके सेफमे धऽ सेफ बन्द करैत काल कामेश्वरके बुझएलै केओ दरबज्जापर आबि गेल अछि। ओ भय आ क्रोधसं चिचिआइत घुमैए - 'रे विसुनमा...।' बात पुरा करैत कि सोझांमे पत्नि आ एकमात्र बेटा राजिवके रोष आ घृणासं अपना दिश तकैत देखैत अछि।

कामेश्वरके तिजोरी लगाबहुके सुधि हेरा जाइछै। भरल तिजोरीमे हजारी नोट सभ ओहिना थकिआएल देखा रहल छैक।

कामेश्वर पत्निके किछु कड़किए कऽ पुछैत छैक -'अहां एत्त किए अएलहुं? आइ धरि ...।'

'हं, हम आइ धरि एत्त नहि आएल छलहुं। अथवा कही अहां एहन बनौने छलहुं जे घरक स्त्रिगण एहि मकान तक नहि आबथि। आ जखन अएलहुं त अहांक ई रुप देखलहुँ।'-बातके कटैत बटेसरबाली बजैत अछि।

'अएँ, की देखलहुं' -तिजोरीदिश देखि - 'ई पाई त अही सभक हेतु तहिया कऽ रखैत छी ने। ई शान शौकत एहिना नै ने छै।'

'दूर जो बढनीमारु एहन शान-शौकतकें जे दोसरके लुटिकऽ, मारिकऽ जोड़लजाए'

कामेश्वर त सकदम्म भऽ जाइत अछि। पत्निदिश गौरसं तकैत अछि। ठाढ़े-ठाढ़ ओ बेटादिश सेहो तकैत अछि जे ओकरा दिशसं मुंह फेरने दोसरदिश ताकि रहल होइछ।

फेर बजैत अछि - अहां ई की बजलहुं राजिवक माय। हम

लुटिकऽ लौने छी ई रकम सभ !'

'हं, अहां अपहरण, हत्या कऽकऽ पाइ जोड़ने छी। लुत्ती लागो अहांके पाइमे। जे सभ किछु नष्टकऽ क राखि देलक अछि।

'हम एखनो नै समझलौं। अहां कह की चाहै छी ?'

'त सुनू, हम ई कह चाहैत छी जे हम सभ अहां जे लुखियाके अरहबै छलिऐ से सभ बात सुनि चुकल छी। बौआ हमरा घरपर कहलक त हमर सोझिआ मन नै मानैत रहै। आ जखन एत्त अएलहुं त ई रुपरंगदेखि कऽ अवाक् छी। आइ धरि जाहि मरदसंगे हम जीवन वितौलहुं ओ एहन पापी, अपराधी निकलत हमरा पता नै छल ...।'- वटेसरवाली धौना कर' लगैत अछि।

राजिव आबमुंह खोलैत छैक -'चल माय। आब त पतिअएले किने तो, लोक ओहिना नै गामभरि बाज' लागल छै। मधेश आन्दोलनक आड़मे एहनो अपराधी सभ जन्म लेने अछि जे सम्पूर्ण समाजकें अपन क्षुद्र स्वार्थक खातिर बन्धकी बना देने छैक, ओकरासं दाम असूलैत छैक। छीः एहन व्यीक्तके वापो कहब आब हमरा लेल मृत्युक समान हएत। चल, कानूनी कार्यवाही करबै। इएह जरुर किरनके अपहरण करौनै हएतै।'

माय-बेटाक सम्वादसं एकाएक थकित भऽ गेल कामेश्वर सोफापर पड़िरहल छल से किरनक नामपर चौंकि उठैत छैक।

'कोन किरन ?'

'उएह किरन, जकरासंग राजिवक विवाहक बात हम अहांके कहने छलहुं। आ अहां आन्दोलन शांत भऽ जएतैक त सोचबाक बात कएने रही। ओइ बेचारीपर की वितैत हएतै से के जनैत अछि। लोक लुखियाके नाम कहैछै, उएह उठौने छै ओकरा। कहु ई कुकर्म किए कैलिऐ ? की अहांके लगैए, किरनके विना अहांक बेटा एक्को क्षण जीअत ? ककरा लेल ई धन, सम्पत्ती आ शान शौकत ?'

'चुप माय ! एहनदुष्कर्मी व्यक्तिक बेटा कहि कऽ किए समस्त समाजक भलादमी श्रमजीवी वापक अपमान करैत छीही। हम त

कहलियौ ने चल। आब जे हएतै, पुलिसे स्टेशनमे हएतै।'

कामेश्वरक आंखिमे सेहो नोर भरि अबैत छैक। ओ आलमारी खोलैत अछि आ ओइमेसं पेस्तौल बहार करैत अछि। बटेसरवाली राजिवके पकड़ि कऽ अपना लग सटा लैछ। ओकरा मुंहपर भयक रेखा दौगि जाइछ। पता नै पेस्तोल ओ ककरा पर चला दैक।

कामेश्वर पेस्तोल हाथमे पकड़ि ट्रेगरपर आंगुर कसि पत्नि आ बेटा दुनूसं कहैत छैक -'ठीक छै। हम अपराध कएलहुं अछि। किरनक अपहरणो हमरे कहलापर भेल छैक। अनजानमे हमरासं जे भूल आ पाप भेल अछि तकर दण्ड तोरा सभके नहि, हम अपने दैत छी।' आ कानने पेस्तोल सटा फायर कर' चाहैत अछि कि पत्नि राजिवके छोड़ि दौडि कऽ कामेश्वरक हाथ पकड़ि कऽ घीचिलैत छैक।

ई की कऽ रहल छी। जे अपराध अहां कएलहुं अछि, तकर दण्ड मृत्यु नहि, प्रायश्चित छैक। अहां प्रायश्चित करबाक संकल्प लीअ। सभ ठीक भऽ जएतै।'

राजिव सेहो किछु हतप्रभ त भेल छल, मुदा घृणा एतेक बढ़ि गेल छलै जे एहि घटनास ओ ततेक विचलित नहि भेल अछि।

'हम की करु ! केना कऽ आइ समाजमे जी सकब ? जकरा अपन घरक पुतहु बनैबाक तैयारी करैत छलहुं तकरे बन्द कऽ देलिऐ। हे भगवान ! बटेसर बाली हम की करु, अहीं कहु !'

'हम कहलहुंने ! प्रायश्चित करु ! आइसं ई धंधा छोड़ि कऽ सुच्चा मधेशी बनि अपन अधिकारक लेल अपनाके समर्पित कऽ दू। किरन बेटीके तत्काल मंगाउ, छोड़ि दिऔ। मास्टर साहेबसं माफी मांगि कऽ बेटीक हाथ मांगि लियौ अपना बेटाक लेल। बस... । की राजिव ?'

राजिव किछु बजैत नहि अछि। मायके बुझल छै जेना ओकर बाप ओकरा माया करैत छैक, राजिवो तैस कम नहि। एकटा बेटा, जे कहै, तुरत हाजिर। अपना सोझांसं बाहर पढ़' नहि पठौलकै। एक मात्र सन्तान, कोरामे खेलत, आगांमे रहत। राजिबो मानि जएतै से मायके विश्वास छलै।

‘ठीक छै, हम तुरंत खबर करैछी। कत्त छै ओ सभ। किरनके ल क۶ तत्काल मास्टर साहेब लग लओतैक। अहां सभ घर जाउ।’

कामेश्वर मोटर साइकल निकालैत अछि आ दक्षिण मुंहे कतौ अज्ञात स्थलदिश बढ़ि जाइत अछि।

ㄷ ㄷ ㄷ

बेलेरो जीपके भीतर आंखिपर पट्टी आ दुनू हाथके रसीसं बान्हल किरण निर्मिमेष भावे दुनू वलंठ मुस्तंडाके उपस्थिति अनुभव करैत रहैत अछि। गाडी-वेगसं भागल जारहल छैक। रस्ता किछु उभर खाभर छै, जाहिसं ग्रामीण वाट हएतै - किरन अनुमान लगबैत छै। समय की हयतै पता नहि। दुनू किछु बजितो ने अछि। तावत एक गोटेक मोबाइलक घंटी बजैत छैक।

जी-मोबाइल उठब वला आदरसं बजैत अछि। पता नै मोबाइल कर’ बला की कहै छै ओ अपन साथीसं आवेगमे बजैन अछि - भाइ जल्दी गाडी घुमा। वौस कहै छै जीरोमाइल आब’ ला। चल जल्दी। गाडी घुमैत अछि जेम्हँरेसं आएल रहैछ - तेम्हरे चलि पड़ैछ। किरण अनुमानो ने लगा पवैत अछि आखिर की भैलै जे गाडी उनटे घूमि गेलै। मूदा ई धरि जरुर बूझैत रहए ओकरा उडएबाक स्थान पविर्तन कएल जा रहल भ सकैछ। कनेक बेसी सुरक्षित स्थान।

□□□□

७

शहरक कातमे एकटा अढ़ाई मंजिलक मकान छैक। अगिला सिसाक केविनमे कम्प्यूटर सभ राखल छैक। उपर बोर्ड लिखल छै - राजिव इम्पेक्स। एत्त माल-सामान सप्लाईक काज होइत छैक। कएकटा कर्मचारी छैक। सडक कातक मुंह व्यापारक हेतु। भितरका कोठरी-गोदामक हेतु आ उपरका कोठरी सभ दोसर अफिसके लेल।

एहि मकानक दूटा प्रवेश द्वार छै। सडक कातक जनता जनार्दनके लेल। पछबारी कात खास-खास व्यक्तिक लेल। गेस्टहाउसे जकां कामेश्वर सिंह एत्तहु व्यवस्था कएने अछि। एहि ठाम ओ भलादमीक रुपमे कहियो ने अबैत अछि। जतेक अपहरण होइत छैक एही ठामक गोदाममे राखल जाइत छैक। मकानके भितर गेलापर पहिल तल्लापर एकटा पैघ कोठरी छैक, जाहिमे गेस्टहाउस जकां सोफा सभ धएल मुदा नीक, गदगर। टेलिफोन सेट राखल। नीचां कालीन ओछाओल। जत्त ओ शहरिया मालक डील करैत अछि। किछु एहनो व्यवसायमे ओ संलग्न अछि जे समाजद्वारा मान्यता प्राप्त नै छै। ओइ गोदाम, कार्यालय आ मालक रक्षाक लेल हथियार बन्द युवक सभ चौबिस घंटा पहरा दैत छैक मुदा सभ कामदार आ दोकानदारक रुपमे।

कामेश्वर सिंहक मोटर साइकल पछिला दरबज्जासं भितर प्रवेश करैत अछि। ओकरा तीन-तीनटा मोटर-जीप छै, मुदा ओ मोटर साइकलमात्र चढैत अछि। एकर कारण की छै केओ जानि नहि पौलक अछि आइ धरि। गेटपर चौकिदार सैलूट करैत छैक जकर कोनो उत्तर देनहि ओ सरसराइत मकानक अंगनईमे जा मोटर साइकल रोकैत

अछि। सभ सुरक्षा कर्मचारी सतर्क भऽ जाइछ। ई विना सूचना आ असमयमे मालिकके अएबाक कोनो अर्थ त हयतै जरुर। सभक चेहरापर दहशत पसरि गेल छै। कएक बेर मन खराब होइछै त ओधबाध कऽ पीटि दैत छैक। कोहराम मचा दैत छैक। तखन समाजसेवी नहि, चण्डाल लाग लगैत छैक कामेश्वर सिंह।

कामेश्वर सिंह सरासर अपन कोठरीमे जा आंखि मुनि कऽ सोफापर ओंगठि जाइछैक। सभके बूझबामे आबि गेलै, आइ फेर किछु हएतै। पता नै ककर शामत आएल छै। ककरो भितर जा चाह-पानिक लेल पुछबाक हिम्मत नै होइछै। सभ दरबज्जाक वाहर थाहाथही देने आदेशक प्रतिक्षा कऽ रहल होइछ।

कनेक काल एहने अवस्था रहलै। तखने पछिम भरसं जीपके अबैत देखलक सभ। कनेक लग अएलै त चिन्हलक - ई त अपने जीप छलै बलेरो। कैला घुमलै ! एकरा त बांके जंगलमे जाएके छलै। कोनो लफड़ा भेलै कि ! एही लाने त माकिकके चेहरा उड़ल छै। कतेको बात ओतुक्का लोक सोचैत रहल।

जीप ओहिना सरासर आंगनमे आबि रुकलै। वाहरक बढ़का दरबज्जा बन्द कऽ देल गेलै। जीपसं किरनके नीकालि वंठा उपर एकटा दोसर कमरामे लऽ गेलै। केवार बन्द कएलक आ कामेश्वरक कोठरीमे आबि ठाढ़ भऽ गेलै।

'अएले ?' - कामेश्वर अनमनाएले सन पुछैछै।

'जी मालिक। आदेश पबिते घुमि गेल छली। की फिरौती आबि गेलै ?'

बंठाक ई पुछब ओकरा लेल अपशकुन भऽ गेलै। कामेश्वर जेवीसं पेस्तौल नीकालि वंठापर तानि देलकै -'सार, तोंही सभ दिनराति एकरा उठाउ, ओकरा पकडू, एतेक पाई मांगु, ई करु ऊ करु कहैत-कहैत हमरा सनका देने छे। आ आइ तोरे सभके वातमे लागि कऽ एकटा बढ़का अनर्थ कऽ बैसल छी। कह, शूट कऽ दिऔ ?

वंठाक त बोलिए बन्न भऽ गेलै। ई त सभ दिनके धंधा छै। माल मिललापर छोड़ब। फेर नयां मुल्लाके खोज करब। मधेश आन्दोलनक बाद त ई दैनिक काज जंका भऽ गेल छै। कहियो मालिक एना नै पिताई छलाह। आइ किएक।

बंठा मनेमन बहुत बात सोचि लैत छै। इहो सोचि लैत छैक जं किछु बाजब तं अनर्थो भऽ सकैछै। देखी मालिक की कहै छथि।

'तों सभ जकरा जंगलमे काट' लऽ जा रहल छलीह जनै छही के छै ?'

'मास्टर साहेबके बेटी।' - वंठा साहस कऽ बजैत छै। ओकरा इहो बुझल छै मालिकके बात के उत्तर नै दौक त तैयो ओकरापर बिसा सकैछै।

'सार, ओइ मास्टरके बेटीके नाम जनै छीही ?'

'जी नै, तकर जरुरते नै पडलै। उठौलिऐ आ एक दिन चुरेमे आ फेर एहि ठाम बन्न कऽ देलिऐ।'

'पता नै लगबक चाही। के अछि, ककरसन्तान अछि। पाइ दऽ सकैए कि नहि।'

'माइवाप, हम सभ त पहाड़ी देखिते नाम गाम कुछ नै पुछै छिऐ, की इएह कम भेलै जे ओ पहाड़ी अछि।'

'बस एही ठाम हम मात खा गेली रे सार। ई त मास्टर रमेश उपाध्यायक बेटी किरन छै, जकरा हमर बेटा राजिव प्रेम करै छैक आ जकरासं विआहक लेल हमर मंजुरी लऽ लेने रहै ओकर माय। कह त कतेक अनर्थ भऽ गेलै। आब हम कोन मुंहस ओकरा आगां जएबै ?'

बंठा त चुप्प। लगैछै जेना ठीके जुलुम भ गेलै। वाहरमे दहशतसं एक पतानी भऽ ठाढ़ पांचो युवकके त होशे गुम्म भऽ गेलै। पता नै आब की होतै। तखने हहाइत-फुहाइत लुखिया लठैत प्रवेश करैत छैक अंगनईमे। छौरा सभके किछु आश जगलै। सभके मेठ उएह छैक। सभके हवाई उड़ैत देखि ओ ईशारासं पुछैत छैक - की भेलौ ? सभ ईशारेसं भितर मालिक विगड़ि रहल हएबाक बात बतबैत छैक। आब

लुखिया दोमांधमे पड़ि जाइत अछि - भितर जाओ कि जहिना आएल छल चुपेचाप वहरिया दरबज्जासं निकलि जाओ। फेर सोचलक बाहर जएबे करत त कतेक कालक हेतु। फेर त आबही पड़त। ओ हिम्मत कऽ भितर प्रवेश करैत अछि आ हाथ जोड़ि कऽ सलाम करैत अछि।

'या, अएलौ सार। एकरे बहकएने सभ अनर्थ भऽ गेल छै।'

'जी' - लुखिया किछु नहि बुझि बात आगां बाज चाहलक।

'तोंही ने उठैने रही किरनके -मास्टरके बेटीके। ओत हमर पुतहु होब बला रहै रे सार। सभ वर्वाद कऽ देले तों।'

'मालिक, हमरा त किछु ने मालूम है। इहे छौड़ा सभ ओटिऔलकै। हमसंग देलिऐ आ लऽ अनलिऐ। के छै, कहां छै किछु बूझल नहि छल।'

लुखियाक बात सूनि कऽ कामेश्वर एक क्षण मौन भऽ जाइछ। पेस्तोलके हाथमेस जेबीमे धऽ लैत अछि। लुखियाके कहैत छैक -'जो बजा सभके।'

लुखिया बाहर जाइत अछि आ पांचोके बजा अनैत अछि। सभ अर्ध गोलाकारमे कामेश्वरक सोझां ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

'देख, जे भेलै से भेलै। जे तों कएले ताहिमे हमरो हाथ रहए तएँ मात्र तोंही सभ दोषी नै। दोषी हमहुं छी। ई घटना हमरापर बढ़का बोझ बनि गेल अछि। हम आब एहु दुआरे एहि सभसं अलग होब' चाहैत छी जे हमर पत्नि आ एकमात्र सन्तान राजिव सेहो सभ जानि लेलक अछि। हमर घरमे ववंडर उठि गेल छैक। आब हम कनेको देरी करब त सब कुछ बर्बाद भ जायत। आ अपन घरके वर्वाद होइत नहि देखि सकैछी।'

लुखिया साहस करैत अछि -'मालिक, तब हमरा सबके लेल की हुकुम है ?' जखन हमही छोड़ चाहैत छी त तोंहुसभ ई सब छोड़ि दे। अपन-अपन रोजगार कर। घरपरिवार बसा आ समाजमे प्रतिठासं बैस।'

सभ गंभीर भऽ जाइत अछि। ककरो किछु बोल नै फुराइत छैक। तैयो साहस कऽ युवक महक एकटा बजैत अछि - हम सभ त बड़

अपराध कऽ लेने छी। ने पुलिस छोड़तै ने समाज। तखन अपन घर केना बसएबै ?'

'वात त तोहर उचित छौ। एकटा उपाय छै। हम प्रशासनसं बात करैछी आ तोरा सबके हथियार सहित आत्मसमर्पण करा दैत छियौ। राज्यसं सुरक्षा भेटि जएतौ आ असल नागरिक सेहो बनि जएबे।'

मालिकके बात सभके नीक लगैत छैक। जखन मुहड़े उछटि गेलै त असवारीके कोन भरोस। सभ एकस्वरसं जवाव दैत छैक - ठीक छै मालिक जेना अहां नीक करिऐक। हम सभ तैयार छी।

कामेश्वर उठैत अछि आ कोठरीमे एक टहलान मारैत अछि। जेना किछु सोचि रहल होइक। फेर किछु फुराइत छैक आ वंठाके कहैत छैक -'बचियाके अत्यन्त आदरके साथ खाय पीबला दही। हम एखन जाइछी। जत्त कहबौ लाबला तत्त अदबस लऽकऽ आबि जइहे।'

ठीक छै मालिक' - बंठा बजैत अछि। आब सभमे फूर्ति आबि गेल रहैत छैक एक त जान बचबाक आ दोसर मालिकके रुप परिवर्तनक।

कामेश्वर मोटर साइलकपर चहरि फेर शहर दिश बढि जाइत अछि। एम्हर सभ अपना-अपनीके किरनके खुएबा लेल सामानक ओरिआओन कर' लगैत अछि।

□□□□

८

कामेश्वर जखन रमेश उपाध्यायक घरमे पहुंचैत अछि तखन अवाक् रहि जाइछ। घरमे ताला लागल रहैछ। तखने राजिबो पहुचि जाइछ। पड़ोसियास पुछैछ त ज्ञात होइछै ओ सभ भोरे कतहु चलि गेल अछि। आब ? राजिव त फेर छटपटा उठैत अछि। ओकरा त की करु की नै किछु नै फुराइछ। कामेश्वर बेटाक पीड़ा बुझैत छैक। ओकरा मोन पड़ैन छै जगमोहनजी। ओ त उपाध्याय जीक लंगोटिया मीत छथि। हुनका त जरुर पता हएतनि। वेटाके पाछा अएबाक ईशारा करैछ आ जगमोहनक ओत्त चलि पड़ैछ।

जगमोहन दरबज्जापर चौकीपर चीते पड़ल अछि। घरवाली वगलमे बैसल किछु बुझा रहल छन्हि। दूटा नेना टुकुर-टुकुर अपन वाप-मायक उदास-उदास अनुहारके अपलक देखैत जा रहल अछि।

जगमोहन रहि-रहिकऽ छाती पीट लगैछ - हमर मीत हमरासं दूर चलि गेल। ई रछसवा सभ मनुक्खके मनुक्ख रह नै देब चाहैछै। कोना कऽ रहबै हम मीत बेगैर।

जगमोहनक कनियां विसुनपुरवाली ठाढ़स बन्हवैत कहैत छैक - आब जे होएबाक छलै से भऽ गेलै। जुआन वेटीके केओ उठाकऽ लऽ जाइ आ औकातसं बेसी पाइ मंगै त केओ की करतै ? धनो गेलै आ इज्जतो ! कोन मुंह लऽकऽ रहौक !

जगमोहन हाकरोस करैत अछि-हम ई जनिती त मीतके छोडि क कतौ नै जइती। हमरा जाइते की स की भ गेलै। हम अपनाके कहियो माफ नै क सकबै।

तावत कामेश्वर अबैत अछि। घरवाली ओत्तसं उठि कऽ आंगन

चल जाइत अछि। कामेश्वर वाइकसं उतरि जगमोहन लग आबि चौकी पर बैसैत अछि। पाछा पाछा राजिब सेहो अछि। जगमोहनक हालति देखि अवाक् भऽ जाइछ। तैयो हिम्मत कऽ पुछैत अछि - भाइ जगमोहन, ई हाल की बनौने छी ?

नै, पुछु कामेश्वर भाइ ! अहां त देश-दुनियां देखने छी। बुझै-गमै छिऐ। केओ पाइके खातिर एना कऽ ककरो घर उजाड़ि सकैहै। मधेशके मुक्ति ! देशके मुक्ति करबेरमे कहां एनाकऽ अपने आदमी सभकें मारै-पीटै आ अपहरण करै। एकटा गरिब मास्टर जकर पुश्तैनी बास एत्त रहै ओ आइ भगा देल गेल अछि। ओकर बेटी लापता छै', जानसं उपर पाइमंगै छै वेटीके छोड़बा लेल ! ई कोन आन्दोलन छै ? पापी, अपराधी सभ बुझौ जं ई ओकर वेटी-पुतहुक संगे भेल रहितैक त की होइतैक ?

कामेश्वर अवाक् भेल कखनो बेटाक उत्तेजित अनुहार दिश त कखनो जगमोहनकें दिश देखैत अछि जे बजैत-बजैत जोशमे आबि उठि कऽ बैसि गेल अछि। ब्यबहार एहनसन जे जं अपरधी भेटितैक त कांचे चिबा जइतै।

राजिव साहस कऽ बजैत अछि - काका, मास्टर साहेब कत्त चल गेलाह ? घरमे त ताला लागल छै ?

जगमोहन- उएह त कहलियौ बौआ ! अपन वेटीक दुख सहि नहि सकल। तैपरसं रोज पाइके लेल धमकी। काल्हि अपन घर बेचि कऽ काठमाण्डूके बस पकड़ बस स्टैण्ड चलि गेल अछि। हम कतबो रोकलिऐ',अपन वेटी इजोतियाके अवाइके बातो कैलिऐ तैयो नै मानलकै। दहोबहो आंखिसं नोर बहैत सपरिवार रिक्शापर चहरि हमरे आगांसं चलि गेल, हमर वात नै मानलक हमर मीत, हमर हृदयके टुकड़ी। कामेश्वरभाई, जत्त आदमी इनसानियत छोडि देने हो ओत्त बैसलो कैला जाए। आब एहि माहौलमे हमहुं सभ कोना रहब ? ई राज्य लेत ककरा लेल, जनते नै त राज कथीले ?

कामेश्वर घड़ी देखैत अछि -साढ़े पांचमे खुजबला बस एखन छव

बजै छैक। माने आधा घंटा भेलै बस खुजि गेलै। मोटर साइकिलोसं पाएब कठिन तखन ?

राजिव दिश तकैत अछि। ओकर मुंहपर भावदेखि ओकरा किछु कहबाक साहस नहि होइछ। मोबाइलपर कोनो नम्बर दबबैत छैक। ओम्हर ककरो मुजेलिया आ महेन्दंनगर विचमे गेल बसके रोकबाक आदेश दैत छैक। जगमोहन आश्चर्यसं ई सब देखैत रहि जाइत अछि। कामेश्वर ईशारा करैछ आ कहैत अछि - जगमोहन जी, जल्दी अपन मोटर साइकल निकालु। चलु हमरासंग उपाध्यायकें घुरा कऽ लाबक अछि।

जगमोहन आ राजिव दुनूके बुझवामे किछु नै अबैछ। तैयो मीतके घ'रबाक आशमे कामेश्वरक वातकें मानैत जगमोहन मोटर साइकल निकालैत अछि। राजिव वापक पाछा पाछा चलैत अछि आ मुजेलिया दिश जाइत सडकपर उड़ि जाइत अछि।

□□□□

९

रामानन्द चौकक बस स्टैण्ड। दूनू बेटा बेटी प्रतिभा, १० वर्षक आ विनोद ६ वर्षकसंग दुनूपरानी बसमे बैसि चुकल अछि रमेश उपाध्याय। आंखिमे बेर-बेर डबडबा अबैत नोनके गरदनिमे लेपटायल गमछासं पोछैत अछि। पत्निक हाल सेहो बेहाल छैक। ओ पलटि-पलटि कऽ पाछां, चारु कात तकैत रहैत छैक। माने लगैत हो केओ ओकर वेटीके लेने ओकरा लग आबि रहल हो। ओना ओकरा बुझल छैक ओकर बेटीके वांके जंगलमे रखने अछि चंडलबासभ। वेटी किरणके आइए पास केलाक बाद कम्प्यूटर इंजिनियर बनएबाक लौल रहै। आब नहि जानि कोन चंडलबाक चंगुलमे अछि।

मास्टर साहेब पत्निक दर्द बुझैत छथिन्ह। दुनू बच्चाके कोरामे लऽ भोकासी पारि कान' लगैछ। बसमे बैसल लोक अकचका जाइत अछि। किछु चिन्हल लोक टोकि दैत छैक -की भेल मास्टर साहेब।'मास्टेर साहेब आंखिक नोर पोछैत चुपचाप अपन सीटपर बैसि जाइत अछि। पत्नि हाथसं मास्टर साहेबक हाथके थपथपा दैत छैक।

बस खुजबाक समय भऽ गेलै। ठीक पांच तीसमे खूजि जाइछ। पत्नि फेर एक बेर चकुआइत अछि। आ निराश भऽ पतिक मुरझाएल अनुहारक संग तालमेल कर लगैछ। मुश्किलसं आधाघंटा भेल हयतै आ कुम्हरौरासं आगां निकलल हयतैक कि किछु मोटर साइकर पर सबार युवक सभ बसक आगां मोटर साइकल लगा दैत छैक। बस कड़कड़ाइत ब्रेकसंग रुकैत अछि। मास्टर साहेबक आंखिमे भय दौड़ि जाइछ। पाइ नहि देबाक कारणें कतौ उएह अपहरणकारी त बस नै रोकलक। पत्नि त आर थर-थर कांप'लगैत छैक। वसमे चढ़ल

आनो लोक डरे पसीना-पसीना भऽ जाइछ। ई सांझे केहन डकैती भेलै ?

दू गोट युवक बसके भितर ढूकैत अछि । यात्री सभ पर नजरि दौड़बैत छैक । पुछैत छैक- एहिमे मास्टर उपाध्यायजीके छथि ?

लीअ, आब त सोरहो आना हमरे सभके जानपर बनि गेल - मास्टर साहेब डरे थर-थर कंपैत उतारा दैत अछि - हमहीं छी !

दुनू युवक अत्यन्त भद्र व्यवहारक संग मास्टर साहेब लग अबैत अछि आ आग्रह करैत अछि - अपने सभ उतारियौ, कामेश्वर बाबू भेंट आबि रहल छथि ।

मास्टर साहेबके विश्वास नै होइछै। जरुर ई सब कामेश्वर बाबूक नामपर उतारि लेत आ जेहो किछु बांचल अछि सभ किछु लुटि लेत। मारियो सकैत अछि। ओ उठ नै चाहैत अछि। पत्निक अनुहार सेहो स्याह भऽ गेल छै। बच्चा सभ डरे मुंह मलीन कऽ वाप-मायक अनुहार देखि रहल होइछ।

युवक - अहां कनेको चिन्ता नै करु, ओ अपनेक वेटीके लऽकऽ आबि रहल छथि ।

उपाध्याय दूनू परानी फेर चौंकि उठैत अछि- कामेश्वर बाबू आ हमर बेटी। नै जरुर किछु लफरा छै। हमरा सचेत हएबाक चाही।

अहां कथीक गुनधुनमे पडि गेलहुं मास्टरसाहेब । हमरासभपर विश्वास करु,झूठ नै कहै छी ।

मास्टर साहेबके लगैछै भरोसा नहि करबाक आब कोनो उपाय नै छै । ओहुना त बर्वादे अछि, एहुना सहीं। ओ दुनू बच्चाके डोरिअबैत अपन सामान हाथमे उठौने बससं उतरि जाइत अछि। डिक्कीमे धएल सामान उतारबाक एखन जरुरति नहि बूझैत अछि। पता नहि कखन की भ जाए ।

बसक यात्री सभ अबुझ जकां एक दोसराक मुंह देखैत रहैछ। बसके एखनो किछु युवक रोकने छैक। वातावरणमे दहशत पसरि गेल

छै । यात्रीसभ सोचैत अछि आखिर पुलिसो किए ने अबैछै । जान त बांचैत ।

दुनू युवक उपाध्यायजीक हाथसं सामान सभ अपना हाथमे लऽ लैछ आ बससं उतरैत अछि। निचांक खाली जगहमे सामान सभ राखि युवक मोबाइलमे कमरोसं वतिआइत अछि। फेर मास्टर साहेब लग आबि बजैत अछि - बस, आबि गेलाह। अहां सभ निश्चित रहु।

ताबत तीनटा मोटर साइकल रुकैत छैक। मास्टर साहेब झोलफोलमे देखैत अछि - एकटासं कामेश्वर बाबू ,दोसरसं राजिवके उतरैत आ तेसरसं मीतके। आब किछु भरोस होइत छैक - बात किछु छैक जरुर !

कामेश्वर लगमे आबि मास्टर साहेबके पयर पकड़ि लैछ -मास्टर साहेब हमरा नै बुझल छल जे किरन अहांक बेटी अछि। धोखामे एकटा पैध गलती हमर आदमी कऽ लेने अछि। अहां जे दंड देब चाहै छी दऽ सकैछी।

जगमोहन सेहो अवाक् भऽ जाइछ। किरनक अपहरण कामेश्वर बाबूक आदमी कएलक ! एतेक पैध समाजसेवी आ एहन व्यवहार !

मास्टर साहेब त अकवक भऽ जाइछ। कखनो मीत के त कखनो अपन पत्निके देखैत अछि। राजिव मुड़ी गोंतने ठाढ़ अछि।

हम एखनो किछु नै बूझि सकलहुं कामेश्वर बाबू -मास्टर रमेश उपाध्याय आश्चर्यसं पुछैत अछि।

मधेशआन्दोलनक क्रममे पाई उगाहीक धन्धा खूब जोरसं चललै । शूरुमे ई एकटा मिशन छल,बादमे कमाइक जरिया भ गेलै । एहने धुरफन्दमे पडि हमरो आदमी ई कुकर्ममे लागि गेल आ आइ किरन ओकर शिकार भैलैए । हम अपराधी छी ,जे सजाय देबाक हो हम तैयार छी।

मास्टर साहेब निचांमे धएल बेंचपर धम्मसं बैसिजाइत छथि । हुनका नै फुरा रहल छन्हि जे की कहओ । तैयो मोनमे उठि रहल झंझाबातके दबबैत कहैत छथि- कामेश्वर बाबू, हमरा बूझल अछि

मधेश स्वायत्त प्रदेश बनबाक चाही । प्रयाश जारी अछि,रहबाको चाही । मुदा तकरा लेल पहाड़ी-मधेशी विचके दुरी बढ़ाकऽ नै एकजूट भऽकऽ बढ पड़त । अहांक आदमी भ्रममे छथि । एहन काज कएलास की परिवर्तन हएत । अहांसभकें ई बात सिखएबाक चाहिऐक ।

कनेक काल गुम्म भ- हमर बेटी कोन हालतिमे हएत -अहीं कहु ई उचित भेलै ?

नहि-किन्नहु नहि - कामेश्वर एखनो पयर पकड़ने अछि- तएँ ने क्षमा मंगैत छी । हमरा माफ करु !

एत्त माफक बात नै छै । बात हमर प्रतिष्ठाक, हमर बेटीक इज्जतक अछि । केना ओ समाजक आगां आबि सकत ।

मास्टर सदैब तं क्षमाशील होइत अछि, जरुर अहांके माफ करताह । मुदा ई कुकर्म जे आन्दोलनक नामपर भेलैए आ भ रहल छै तकर समाधान की -वकौर लागल जगमोहन कुहरैत अछि ।।

ठीक छै, आनके बात नै कहब,हमरसभ केओ सरकारक आगां आत्मसमर्पण करत । शांतिपूर्ण आन्दोलनसं परिवर्तन लओतैकसभ, ई संकल्प लेलक अछि - कामेश्वर वाजल ।

तखन देरीए सही अपन घर धूरिअएलहुं, हम दण्ड देबबला के,क्षमा करथिन्ह ईश्वर । बेटी कत्त अछि। हमरा बेटी चाही आ बसोके देरी होइछै । चल जएबै ।

राजिबक माय सेहो ताबत एकटा दोसर मोटरसाइकलपर जूमि जाइत छैक ।

कामेश्वर मास्टर साहेबके आश्वस्त पाडैत कहैत छैक - अहां निश्चिन्त रहु, अहांक वेटी सुरक्षित अछि, कनेके कालमे आबि जाएत ।

तावत मोटर साइकलपर पाछां बैसल किरन अबैत अछि । मायके देखिते मोटर साइकलपरसं उतरि दौड़िकऽ गलामे गला मिला भोकासी पाड़ि कान'लगैछ । वापक आंखिमे सेहो नोर भरि जाइछ । वेटी-मायक कन्नारोहटिसं माहौल गम्भीर भऽ जाइछ । राजिव कनेक हटि क ऽ ठाढ़

भऽ जाइछ । कामेश्वर मास्टरके देखैत चुपे अछि ।

किछु शांति भेलाक बाद मास्टर साहेब सभसं हाथ जोड़ैत विदा मगैत छथि - माफ कएल जाओ, आब बेटियो आबि गेल अछि । हमरा सभके जाए देल जाओ । वसके यात्री सभ कुलबुलाइत हएतै ।

'आब कत्त जएबै अहां । जे भेलै से भेलै ।' रे वंठा, जो बसकें जाए दही । मास्टर साहेब आब एत्तहि रहताह' -कामेश्वर जोड़ दैत कहैत अछि ।

मास्टर साहेबक स्वर भरिआ गेल छन्हि - नै, कामेश्वर बाबू ! हमर वेटी धूरि आएल अछि। एकर भागमे जे होतै-होतै। कमा-खटाकऽ कोनो झोपड़ियोमे गुजर क ऽ लेबै हम सभ । जत्त प्रतिष्ठा आ इजजत दांवपर लागि गेल हो ओत्तस कोन मोह । आब एहि ठाम रहब सम्भव नहि !' आ फेर भोकासी पाडि कान लगैछ मास्टर साहेब ।

जागेश्वर आगां बढि मीतके पजिया लैछ आ चुप करैत अनुनय करैछ-मीत हमर बात त अहां पूर्बो नै मानलहुं । अन्तिम बेर कहैछी,नै जाउ । हमसभ बेटीके लेल करबै जे कर पडतै ।

अपन मीतोके बातके कोनो मोजर नै देबै ' -कामेश्वर तीर फेकैत छैक ।

मास्टर साहेब आगां बढ़ि मीतके छातीस लगा लैत अछि - मीत, हम अहांके बात एअनो नहि मानि सकब । घरोपर नै मानलहुं, एतहु नहि मानि सकब । हमरा खातिर अहां सभ कैला परेशान हएब । जखन हमर दाना-पानी एत्तसं उठिइ गेल त रहि क ऽ की हएत ।'

आब अहां ओना कोना जएबै मास्टर साहेब ! जं अहांक वेटी अपहरणमे पड़ल नै रहैत त हमर आदमी सभ मनुक्खं नहि बनैत, हम ओकरेमे ओझराएल अपराध पर अपराध करैत जइतहुं । जं ई बन्दी भेलीह, सभ सुधरल अछि । जं ई नहि धूरि अओतीह त हमर वेटा सेहो एहि दुनियांमे नहि रहि पबैत । तखन हमर ई शान, शौकत कत्त चल जाइत, हम कत्त रहितों !'

'हम बुझलहुं नहि ! -अवाक भेल मास्टर साहेब कामेश्वरक मुंह

देख लगैछ ।

बात हमहुं नहि बुझने रहिऐ, आ जखन बुझलिऐ त हमर दुनिये दोसर भऽ गेल । राजिवकें सोर पड़ैत -राजिव एम्हर आ !

राजिवक नाम सुनिते किरन मायक गला छोड़ि चिहुंकि उठैत अछि । राजिवकें लग अबैत देखि आर जोड़सं कान' लगैछ ।

मास्टर साहेब राजिवके आ अपन वेटीके देखैत अछि । ओकर माय बुझैत छैक दुनूक बात तएँ वेटीके चुप करैत किछु कहैत छैक ।

कामेश्वर बजैत अछि-अहां कहने छलहुं मास्टर साहेब,एहि घटनास. अहां आ अहांक बेटी समाजमे मुंह देखएबाक जोगर नै रहलहु ।

एहिमे अपनेके कोनो शक बुझाइत अछि -मास्टर साहेबक मुंह फेर करुआ जाइत छैक ।

कमेश्वर सिंह समधानि क बजैत अछि-आ जं अहांक बेटीके हम अपन पुतहु बनाली त ।

मास्टर साहेबके जेना अपन कान प विश्वासे नहि होइछ । ओ एकबेर फेर अकबका गेल आ टुकुर टुकुर कामेश्वरके मुंहे देख लगैछ ।

कामेश्वर फरिछबैत अछि - मास्टर साहेब अहांक बेटी आ हमर बेटा दुनू एक दोसरासं अगाध प्रेम करैत अछि । एखनो राजिव वेहाल भऽ हमरा वात कहिनी कहने छल, तखन हम बुझलिऐ । तएँ, कहल अछि आब अहां कत्तहुं ने जएबै । जाहि धरतीक ईंच-ईंच अहांक पुर्खासं सिचिंत छैक, मेहनतक घाम आ इमानक लहुंसं सरावोर छैक ओहिपर हमरा सभसं कम अधिकार अहांके नहि अछि । आब अहां जएबै नहि !'

मास्टर साहेब बेटी दिश गहिंरसं तकैत अछि । किरन अपन आंखि तर कऽ लैत अछि । फेर मास्टर साहेब पत्निदिश देखैत छथि । ओहो माथ डोला दैत छैक ।

मास्टर साहेब निसांस छोड़ैत बजैत छथि - तखन, आब की हो ?

कामेश्वरजी कहैत छथि - किरनक विआह राजिवसं होइ से आशिर्वाद अहां दियौक, बस !

हमर अवस्था एहन त नै अछि । दोसर हम सभ पहड़िया समाजक लोक, अहांके कठिनाइ हएत - मास्टर साहेबक बोलमे पीड़ा घोरायल छैक ।

वर्षौसं एहि धरतीपर एक ठाम-एकसंग रहैत दुनू समाज कोनो खास वर्गकें लक्षित कऽ होइत आन्दोलनक शिकार नहि हयबाक चाहैत छलै । ई आन्दोलन त ओइ खस सभक विरुद्ध छैक जे मधेशपर आधिपत्य कर चाहैत अछि । सोचमे गलत प्रवृति बढने बाट सेहो गलत पकडा गेल छलै । आब सभकें ई बात बुझ पड़तै । आ मास्टर साहेब, एहि समझके आगां बढएबाक लेल अहांक स्वीकृति एहि नव अध्यायक प्रारंभ हयत-कामेश्वर सिंहक आबाजमे पाश्चातापक गन्ध ओहिना महशूस कएल जा सकैछ ।

मीत, कामेश्वर बाबू ठीके कहै छथि । हम सभ एहि समस्यासं लड़बै तखने एकर निदान हएतै - जगमोहन समझाब' चाहैत अछि ।

मास्टर साहेब गुम्म भऽ जाइत छथि । पत्नि दिश तकैत छथि । पत्नि बेटी दिश तकैत अछि । बेटी राजिव दिश । एक दोसराक भावके सभ पढ़ चाहैत अछि ।

मास्टर साहेब बजैत अछि - ठीक छै, किरण आ राजिवक विवाहक हेतु हमरा सभक स्वीकृति अछि । मुदा रहबाक लेल हमरा कठिनाई अछि । हम सभ किछु बेचि कऽ जा रहल छी । एतेकटाक परिवार लऽ कत' रहब - कोना रहब ! तएं जखन ठौर भेटिजाएत त एत्तहि आबि विवाहक विधि विधान सम्पन्न करब ।

ई कोना भ सकैछ । कत्त रहबाक कोन बात भेलै । मीतक ओत्त रहब, कत्त रहब । जा धरि विवाह नहि भऽ जाइत अछि, हम अपना ओत्त रहबा लेल कहियो ने सकैछी - कामेश्वर उत्साहित अछि ।

नहि, हमरा ओत्त जगह नै छैक । मीत के जत्त मोन होइ छै रहि सकै छथि । हमरासं हुनका कोन मतलब । जाथु जहां जाएके छन्हि ।' - जगमोहन दुखी मनसं बजैत अछि ।

ई केहन मित्रता भेलै औ जगमोहन ? एहन अबस्थामे अहीं ने काज अएबनि - कामेश्वर जगमोहनके टोकैत छैक ।

नै, मीतके दुख वाजिब छन्हि । ओ त अपना ओत रहबा लेल कहिते छलाह, हमही नै मानने रहिएनि -मास्टर साहेबक बोलीमे ग्लानी छन्हि ।

'समस्या पड़लापर अपना ओत्त रहबाक लेल जखन अनुरोध कएलियनि त मानलनि नहि आ एकटा दलालक हाथे औनपौन दाममे घर बेचिकऽ भागल जा रहल छथि । ई नै भेलनि जे मित्रोके आब दैत छिऐक । मित्रताके कोन मतलब ! चुपचाप भागबाक की अर्थ !-जगमोहन ठीके रोषमे आबि गेल अछि ।

किरनक मायके जोड़पर हम चुपचाप जाइ छलौं । एकर जोड़ रहै मीतकें जखन ई बात पता चलतै त ओ किन्नहु नहि जाए देताह । तएँ-मास्टर साहेब साहस बटोरि क बाजल ।

तखन जाउ, हम कहां रोक अएलहुं । ई त कामेश्वर बाबू छलाह जे किदन कहांदन कहि कऽ हमरा लऽ अएलथि । जाउ, जहां जाएके होइए-आब रुसबाक पार जगमोहनक रहैक ।

बस त कखन ने चलि गेलै । आब कत्त जएताह । अहांके राखही पड़त - कामेश्वर बाबू जगमोहनकें दवाव दैत कहैत छथिन्ह ।

'तं लिअ, मीत रहताह आ जरुर रहताह मुदा हमरा ओत्त नहि' - जगमोहन दृढ़तापूर्वक बजैत अछि । सभ ओकर मुंह देख' लगैछ ।

'हं, ठीके कहै छी । मीत रहताह आ अपन पुश्तैनी घरमे रहताह' - जगमोहन फेर जोड़ दऽकऽ बजैत अछि ।

मास्टर साहेब अविश्वाससं बाजि उठैत छथि - ई कोना संभव छैक ! हम त ओकरा बेचि लेने छी । पाइयो बुझि लेने छिऐ ।!

'मुदा राजिष्ट्री नहि भेल अछि । जे दलाल किनलक से जानि बुझि कऽ रजिष्ट्रीके मीआद एकमास बढ़ौने अछि-जगमोहन रहस्यके उघारैत अछि ।

'से त छै, ई अहांके कोना बूझल अछि ? हम त अहांस चोरा कऽ बेचने छलहुं - मास्टर साहेब किछु संकोचसं बजैत छथि ।

'ओ एहि हुआरे जे ओ घर हमहीं किनने छी, अहींक लेल । हमरा बुझल छल, अहां जिदियाह लोक छी आ स्वाभिमानी सेहो । एखन दुखे जाएत छी,बादमे जं मोन मानि गेल आ आब चाहब त रहबाक लेल घर त चाही । अहां ने ककरो ओत्त रहब ने ककरो आगां हाथ पसारब । तएं गुपचुप ई नाटक कर पडल ।'- जगमोहन बातकें फरछबैत जेबीसं घरक कुंजी नीकालि मास्टर साहेबक हाथपर राखि दैछ । उपस्थित सभ केओ भौंचक्क रहि जाइत अछि । मास्टर साहेबक आंखिमे फेरसं दहोबहो नोर वह' लगैछ आ भरि पांज कऽ मीतकें पजिआ हिंचुक' लगैत अछि ।

'मीत, क्षमा करब । हमरा जाहि तरहें दिनराति फोन कऽ धमकी देल गेल, टौर्चर कएल गेल, अन्तमे वेटीके उठा लेलक हमर मनः स्थिति बीगड़ि गेल छल । हम अपनाके एत्त पूर्णतः असुरक्षित मान' लागल छलहुं, तएँ अहुंस दुरी बढ़ि गेल । हम अनेरे अहांके दुखी नै कर चाहैत छलहुं । हमरा नै बूझल छल एहि धरतीमे अहां सन मीतके जन्म देबाक शक्ति छैक । एहि धरतीसं विस्थापित भ क सांचे हम बड पैघ गलती क रहल छलहुं । मीत, फेर एकबेर क्षमा मंगैछी । अपन जनमधरतीके चिन्हबामे हमरासं ठीके भूल भ गेल छल -मास्टर साहेब आंखिमे नोर भरने भरिपांज क मीतके पजिया लैछ । उपस्थित सभक आंखि भरिया गेलै ।

कामेश्वर सिंह दुनू मीतक कान्हपर हाथ ध घुमबैत घोषणा करैछ - चलु अहां सभक मित्रता एकटा मिसाल बनि गेल अछि । जे गलत वाटपर जएबा लेल उताहुल युवा वर्गकें इनशान बनबाक प्रेरणा देतैक । वस ! तखने राष्ट्रमहान बनत, मधेश महान बनत !

सभक अनुहारपर एक बेर फेरसं खुशी देखि पड़ैत छैक आ जखन मास्टर रमेश उपाध्याय सपरिवार घरदिश घुमैत अछि तं माथपरक नवका जवावदेहीक बढ़का बोझ रहितो उमटाम लादल वयल गाडीक घरमुंहा वयल जकां डेग फरहर आ जी हल्लुक बुझा रहल छैक ।

घरमुहाँ

(उपन्यास)

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

<u>प्रकाशक</u>

जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान

जनकपुरधाम

कृति	:	घरमुहाँ (उपन्यास)
लेखक	:	रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'
प्रकाशक	:	जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान, जनकपुर
प्रकाशन प्रति	:	१००० प्रति
प्रकाशन वर्ष	:	२०६८।२०१२
सर्वाधिकार ©	:	लेखकमे सुरक्षित
मोल	:	रु. १५०।- व्यक्तिगत रु. २५०।- संस्थागत
कम्प्युटर	:	राजुप्रसाद काफ्ले
आवरण कला	:	
मुद्रण	:	
ISBN	**:**	**978-9937-2-4664-4**

Gharmuhan (Novel)

By Ram Bharos Kapari 'Bhramar'

'घरमुहाँ' - प्रभाव आ प्रतिक्रिया

कार्य-कारण-श्रृंखलामे सुगुम्फित ओहि गद्य कथानककेँ उपन्यास कहल जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक विस्तारसँ जीवने-जगतमे अनुभव कएल यथार्थकेँ कल्पनासँ रङि कए रसात्मक/विचारोत्तेजक रुपमे प्रस्तुत कएल जाइछ। मैथिलीक ख्यातनामा आख्यानकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास 'घरमुहाँ' नेपालक मधेस-आन्दोलनसँ उपजल उमड़ल जनआकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, भावनात्मक उद्वेलन, विक्षोभ आ जटिलताकें घोर यथार्थपरक चित्रावली उरेहैत समन्वय दर्शनसंग मर्मस्मर्शी इति पबैत अछि।

आन्दोलन जखन एक गोट ऐतिहासिक उँचाई ल' रहल होइत अछि तँ ओहिमे आन्दोलनकारीक छदम श्वेत भेष द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठाक नकली खोल ओढ़बामे सफल गुन्डाक सरदार कामेश्वर-सन आपराधिक मनोवृत्तिक व्यक्ति सनक निरन्तर प्रवेश होबए लगैत छैक। हत्या, अपहरण, आतंक आ डर-धमकी द्वारा ई वर्ग खास कए पहाड़ी समुदायसँ पैसाक उगाही करैत अछि। अपन अधिकार, पहिचान आ विकसित मुद्दाक एहि विराट जनक्रान्तिमे शहादत दैत युवकसभक प्रत्येक दिन लहासपर लहास खसि रहल छै आ ओम्हर ई लुटेरा-तत्व पहाड़ीक दोकान सभमे आगि लगा रहल अछि, सामान लूटि रहल अछि, ओकरा सभक घरपर पाथर फेकि-आतङ्क पसारि रहल अछि। आतङ्कभरल एहि वातावरणमे पहाड़ी होइतो धोतीकुर्ताधारी मास्टर रमेश उपाध्याय अपना घरमे डरे दबकल रहैत छथि। मोन तँ मास्टरो साहेबक होइ छैन्हि जे - अपन मधेसी मित्र जगमोहन अधिकारी जेकाँ जुलुसमे जा जोर-जोरसँ नारा लगा आन्दोलनकेँ समर्थन दिऐक, मुदा सोचै छथि -"जे उन्माद एखन युवा सभमे छै ओ की हमर (पहाड़ी) अनुहारकेँ पचा सकत ?" अदंकसँ भरल मास्टर साहेबकेँ अपन घर ल' अनबाक विचार जगमोहनकेँ होइत छैन्हि, मुदा मास्टर रमेश एहि दुआरेँ अपन मधेश-आन्दोलनक अगुआ मित्र जगमोहनक घर जाएसँ अस्वीकार कए दैत छथि जे कत्तहु आन्दोलन कमजोर ने पड़ि जाइक। १ जून २००७, २५ जुलाई २००७, २८ जुलाई २००७, ५ अगस्त २००७ क वार्ता असफल भेलाक बाद ३० अगस्त २००७क' २६ बूँदापर सहमति होएब मुदा कायान्वयनमे आनाकानीसँ आन्दोलनक फेर उग्र लपट ऊठब - ऐतिहासिक दस्तावेज अछि, जे उपन्यासमे प्रस्तुत भेल अछि।

मास्टर रमेश उपाध्यायक विपत्तिक तमिस्रा तखन अओर सघन भ' जाइत छैन्हि जखन हुनका पता चलैत छैन्हि जे हुनकर बेटी किरण दछिनबरिया टोलक कामेश्वरक बेटा राजीवसँ प्रेम करैति अछि। ताबत ई ककरो ने बूझल छैक जे गामक सम्पन्न आ सम्भ्रान्त मानल जाएबला व्यक्तित्व कामेश्वर गाममे व्याप्त हत्या, अपहरण, चन्दा-आतंक आदिमे संलग्न गिरोहक मुख्य सूत्रधार आ खलनायक अछि। मास्टर महाविपत्तिक समुद्रमे उबडुब कैए रहल छथि कि बेटी किरणक अपहरण भए जाइ छैन्हि आ दश लाख टाका फिरौतीक लेल फोनसँ दिन-राति धमकी आबए लगैत छैन्हि। मास्टर अपन सम्पूर्ण सम्पत्ति बेचिकए विस्थापित होएबाक लेल बाध्य छथि। ओमहर कामेश्वरक एकलौता बेटा राजीव अपन बापक कुकृत्यसँ परिचित भ' जाइत अछि आ मायक माध्यमसँ किरणक मुक्तिक लेल दबाब बनबैत अछि। कामेश्वरकेँ ईं जानि ग्लानि होइत छैक जे ई उएह किरण थिक जकरा पुतहु बना घर अनबाक मोन हुनक परिवार बना चुकल अछि। बसमे चढ़ि चुकल मास्टर रमेश उपाध्यायक ओकर परम मित्र जगमोहन आ अपहरणकारी कामेश्वर गाम घुरा अनबामे सफल होइत छथि।

आख्यानकार 'भ्रमर' अपना समयक प्रामाणिक खिस्सा आबएबला पीढ़ी-दर-पीढ़ीधरि सुनएबामे उत्सुक छथि। तँ प्रस्तुत उपन्यास मूक इतिहासक मुखर सहोदर भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक

धरातलपर कल्पनाक फट्ठा, मृत्तिका, सन्ढी, स’न आदिसँ समकालीन मधेसक जीवन्त मूर्ति तैयारक’ सामाजिक सम्बन्ध-बन्धक रागमयताक रंग ढ़ेउरल गेल अछि जे हृदयहारी अछि। उपन्यास ऐतिहासिक महत्वक दाबेदार एहू कारणें अछि जे ई पहिल नेपालीय मैथिली उपन्यास थिक जे समकालीन राजनैतिक घटनाक्रमपर आधारित अछि।

रमेश उपाध्याय, जगमोहन, कामेश्वर, राजीव, किरण, बन्ठा, लुखिया आदि सभ वर्गीय प्रतिनिधि पात्र अछि। सम्बादमे स्वाभाविकता आ सजीवता छैक। भाषाशैलीक नाटकीयता आ चित्रात्मकताक कारण उपन्यास आदिसँ अन्तभरि सिनेमाक रीलजेकाँ चलैत अछि, जे पाठककें आरम्भसँ अन्तधरि बन्हने रहैत अछि। पहाड़ी-मधेसीक एकता संबर्धनक उद्देश्यसँ प्रणित एहि उपन्यासक यात्रा उबड़खाबड़, पहाड़-जंगल, खुरपेड़ियाक जटिल यात्रा नहि, सोझ-सपाट मैदानक सरल-सरस यात्रा थिक जे सरसराकए अपन गन्तव्यधरि पहुँचैत अछि। तेँ उपन्यासक संरचनामे पेँच-पाँच आ ओझराहटि नहि अछि। मधेस-मिथिलाक आम लोकक भाषामे प्रयुक्त ‘लल्हका’, ‘लभका’, ‘बढ़का’, ‘खुरसीं’ आदि शब्दक सचेत उपयोग उपन्यासक भाषाकें सहज स्वाभाविकता आ अभिनवता प्रदान करैत अछि। आख्यानकार श्री ‘भ्रमर’क ई सद्यःजात कृति नेपालीय मैथिली उपन्यास साहित्यक एक गोट उपलब्धि थिक, ताहिमे सन्देह नहि।

– राजेन्द्र विमल
जनकपुरधाम – १०
१६.११.०६८

एहि उपन्यासमे आएल पात्र एवं घटना काल्पनिक अछि। कत्तहु, कोनो तरहक साम्य मात्र संयोग मानल जएबाक चाही।
-लेखक

एहि रचनाक प्रसंग...!

हमर लेखन प्रमाणित रुपेँ मिहिरमे छपल बालकथासँ होइत अछि आइसँ अड़तालिस वर्ष पूर्व। नेनेसँ लेखन आ छपएबाक उत्साह। दोसर लेखकक रचना पढ़ैत-पढ़ैत मोन हुलसैत रहए, हमरो कोनो रचना होइतए आ एहिना कोनो पत्रिकामे छपैत। हँ, तहिया पुस्तक छपबाक सोच नहि आएल रहए। एकटा सपना जे हमरा आँखिमे बेर-बेर औनाय तकरे कारणेँ मोनमे ईच्छा शक्तिक विकास भेल, दृढ़ता बढ़ल आ अन्ततः 'मिहिर'मे, जे प्रकाशनक हेतु आइरन गेट' टपब मानल जाइत छल हमर रचना प्रकाशित होब' लागल आ कही तँ दू दशक धरि धुँआधार प्रकाशित होइत रहल। मोनक लौल पुरा भेल। तहिए बुझाएल सपना देखब बेजाए नहि, मात्र सपने देखब बेजाए बात थिक। जँ किछु करबै नहि तँ परिणामक आशा कथीक !

से आइ लगभग साढ़े चारि दशकक लेखन यात्रामे हम लगभग सभ विधामे लिखलहुँ। पत्रकारितामे लागल रहलासँ लेखनमे तकर प्रभाव त पड़ल - संक्षिप्तीकरणक। ताहुसँ बेसी प्रभाव रहए गुरुबर डा. धीरेन्दक लेखनक । छोट-छोटकथा, कविता, निबन्ध किंवा उपन्यास। तहिया त पलखति रहैक लोककेँ। निचैनसँ सय-दूसय पृष्टक पुस्तक पढ़ि सकैत छल। तैयो लघुआकारक रचनाक उद्देश्य की ? हमरा आइयो ई बात बुझबामे नहि अवैत अछि। मुदा हमरो रचनामे सएह संक्षिप्तताक असरि पड़ल प्रायः आ प्रायः हमर लेखन तेहनेसन छोट-छोट परिधिमे अपन कथ्यकेँ फरिछएबाक काज करैत रहल।

आइ जखन डेढ़ दर्जनसँ उपर मौलिक रचना पुस्तकाकार रुपेँ आबि गेल अछि तखनो हमरा संक्षिप्त लेखनक मर्म बुझबामे नहि आएल। प्रायः तएँ पूर्ण लेखन मानल जाइत उपन्यास, महाकाव्य आ

परम्परागत पूर्णाङ्गी नाटक लिखबासँ हम कतराइत रहलहुँ। हमरामे लेखनक धैर्य नहि रहल कहियो। स्थीरसँ सोची, ओकरा कतौ उतारी आ मास-दूमास लगा लिखबाक काज करी। फेर साफी कऽ पूर्णता दिऐ। ई हम कहियो ने कएल। सम्भवत : तएँ हम आइ धरि अपने मोन मान' बला कोनो रचना लिखि नहि पएबाक पीड़ासँ लड़ि रहल छी। मैथिलीमे समालोचकक कमि छैक आ ताहुमे नेपालक रचनापर लिखबाक ककरा पलखति छैक। नेपालमे त आर अकाले छैक। तखन रचनाक मूल्यांकन भऽ नहि सकल तएँ अपन लेखनकेँ आनक आँखिए किंवा पाठकक आँखिए तौलबाक अवसर नहि भेटल। हँ, एकबेर मोन प्रशन्न भेल रहए आ साँच वात छै हमरा एखनो ओ रचना प्रिय अछि - 'नहि, आब नहिं। हमर दीर्घकविता। मिथिला मिहिरमे तहिया एकर पांचटा समीक्षा छपल छल। सभ एकसँ एक स्थापित समीक्षक सभक। मोन गदगद भऽ गेल रहए। बड़ कम रचनाकेँ एतेक चर्च होइत छैक। तखन ओ हमर लेखनक एकटा पड़ाव छल, जकर अपन खास महत्व छलैक। मुदा एहन लेखन जे अपनामे सम्पूर्ण होइ, समाजक कथाकेँ कहि सकबाक हिम्मत रखने होए - हमरा लेल खोजक विषय बनले रहल।

महाकाव्य आ खण्डकाव्य लिखबाक हमरामे कहियो इच्छा नहि जागल। हँ, उपन्यास लिखल जाए से मोनमे रहए। मुदा एत्तहु उएह धैर्यक कठिनाई बाधा बनि ठाढ़ भऽ जाए। सय-दूसय पृष्टसँ आगांक लेखन जँ नहि भेल त उपन्यास की ? उपन्यास माने मोटसोट आ अनेकों कथा, उपकथासँ भरल। इएह चिंतन आ यथार्थ हमरा एहि विधासँ दूर रखने रहल।

नेपालमे मधेश आन्दोलन शुरु भऽ गेल रहै। एकटा पत्रकारक हैसियतसँ आन्दोलनक कभरेज मात्रे नहि, साहित्यक विद्यार्थीक हैसियतसँ ओकर भीतरक मर्मकें सहेजबाक हेतु सेहो हम आन्दोलन भरि सड़कपर रहलहुँ। आन्दोलन भेल, सफल भेल, चर्च भेलै,

सामाजिक रुपान्तरणमे किछु महत्वपूर्ण काज सभ भेलै। मुदा एहि सभमे एकटा कतौ चूक रहि गेलै आ वर्षहुक सदभाव एकाएक घृणा आ बदलामे बदलि गेलै। अढ़ाइ सय वर्षक पीड़ा एकटा बाढ़ि बनि कऽ कतेको घर-परिवारकेँ बहा कऽ लऽ गेल, जकर बजूद ओही समाजक हेतु उपयोगी रहैक, ओकर उपस्थिति निर्णायक भूमिका खेलने रहैक। वस, इएह बात हमरा मोनमे गड़ल आ ठनलहुँ किए ने एकरे उपन्यासक कथावस्तु बनाओल जाए। उपन्यासकेँ उपन्यास आ सामाजिक रुपान्तरणक बढ़ैत जोखिमक तथ्य निरुपण।

मोनमे कतेको कथानक धुरियाएल। एकटाकेँ स्थीर कएलहुँ। कतहु कोनो पन्नामे अंकित कएलहुँ। मुदा फेर उएह दीर्घलेखनक बैसारी, धैर्य आ संयमपूर्वक विकछा कऽ प्रस्तुतिकरणक समस्या। कएक मास कीति गेल, लिखलो पांती कत्त हेरायल पता नहि। लगभग विसरले सन भऽ गेल।

एम्हर फेरसँ मोनमे आएल- एकटा विधा त चाही। चलू उपन्यासे सही। फेर पुरना टिपौटकेँ खोजबीन भेल। नहि भेट्ल त मोन पाड़ि पुनः तकरा उतारल। आ जखन लिखबा लेल बैसलहुँ तँ बात उएह भेल। जे सोचलहुँ, से नहि भेल आ बहुत किछु नव अबैत चल गेल। जे लिखाएल ओ अहाँ सभक आगां अछि। हम एकरा उपन्यासे कहि लिखल अछि,, लघु वा दीर्घ नहि। मनमे जे उद्बेग आएल तकरा शब्दमे आकार दैत चल जाएब हमर पूर्वोक प्रक्रिया छल, एखनहुँ भेल। एकर शास्त्रीय निरुपण करबाक जिम्मा सुधी पाठक आ समालोचककेँ। हँ, हम जे कह चाहैत छलहुँ तकरा अपन आदति अनुसार हम कहि गेलहुँ अछि। आब विधागत चौकठिमे ओ कतेक सटीक बैसैत अछि, हमर चिंतनक विषय नहि अछि। हमरा जे कहबाक छल एहि आख्यानमे अवश्य लएबाक हम प्रयास कएल अछि। ओना कथ्य छोट वा पैघ नहि होइछ, ओकर प्रस्तुति महत्वपूर्ण होइत अछि।

'घरमुहाँ' नाम मैथिलीमे एहिसँ पूर्वो कतौ आएल होइक से संभव, मुदा हमर एहि उपन्यासक केन्द्रिय पात्रक मनः दशा, अपन जन्मधरतीसँ लगाव आ प्रेम आ विस्थापनक बाबजूद अवसर भेटिते जन्म धरतीपर धुमबाक अद्भूत उत्साह, स्फूर्ति 'घरमुहाँ' शब्दक सार्थकता प्रदान करैत अछि। तएँ एकरा ताही रुपमे ली से आग्रह।

एहि उपन्यासकेँ प्रकाशन पूर्व अवलोकन कए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करबाक हेतु डा. रमानन्द झा 'रमण' प्रति आभारी छी। वन्धुवर डा. राजेन्द्र विमल अस्वस्थताक बाबजूद जाहि चाव आ उत्सुकतासँ एकरा पढ़लनि, अपन उद्गार व्यक्त कऽ हमर भावनाकेँ उत्प्रेरित कएलनि, हम कोना बिसरि सकैत छिएनि।

जे से, उपन्यासक रुपमे हमर पहिल कृति 'घरमुहाँ' अपने सभक हाथमे अछि। ई बूझैत जे हमर डेढ़ दर्जन मौलिक कृति मध्य एकर स्थानक निरुपण मैथिली संसारमे जाहि रुपेँ होए, हमर गृहणीक हेतु फेर ई एकटा बोझ बनि कऽ घरमे प्रवेश करत। ने रखबाक ठाम, ने सैंतबाक लेल अलमारीकेँ ठाढ़ करबाक कोनो कोन। तखन प्रत्येक कृति घरमे अबैत काल जेहन बात सुनैछी, एकरो बेरमे सुनब, भले मैथिलीक पाठक एहि व्यथाकेँ नहि बुझथि।

धन्यवाद !

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

होरी महोत्सव : २०६८